इकाई 9 दूरस्थ शिक्षार्थी तथा स्व-निर्देशित अधिगम

संरचना

9.0 प्रस्तावना

9.1 उद्देश्य

9.2 दूरस्थ विद्यार्थी

- 9.2.1 अभिलक्षण
- 9.2.2 समस्याएँ
- 9.2.3 अपेक्षाएँ

9.3 स्व-निर्देशित अधिगम

- 9.3.1 अवधारणा
- 9.3.2 चरण
- 9.3.3 लाभ और हानियाँ
- 9.3.4 स्व-निर्देशित अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
- 9.3.5 स्व-अधिगम के प्रोत्साहन की युक्तियाँ

9.4 स्व-अधिगम के लिए आवश्यक कौशल

- 9.4.1 अध्ययन कौशल
- 9.4.2 पठन कौशल
- 9.4.3 लेखन कौशल

9.5 स्व-निर्देशित अधिगम सहायता : संप्रेषण प्रौद्योगिकी की भूमिका

9.6 सारांश

9.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

9.8 संदर्भ ग्रंथ

9.9 इकाई अंत अभ्यास

9.0 प्रस्तावना

खंड 1 और खंड 2 में आप सीख चुके हैं कि व्यक्तिक शिक्षण और अधिगम दूरस्थ शिक्षा का सार है। आप इस तथ्य से शायद सहमत हों कि स्व-निर्देशित सामग्री, स्व-अधिगम सामग्री/स्व-अधिगम मुद्रित सामग्री के माध्यम से दूरस्थ शिक्षण, विद्यार्थियों को शिक्षक की सहायता से अथवा बिना सहायता लिए सीखने योग्य बनाने के लिए लक्षित है।

दूरस्थ विद्यार्थी की प्रकृति, विशेषताएँ और अधिगम के तरीके आदि उनके दूरस्थ अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त, उनका अध्ययन कौशल तथा अन्य कारक दूरस्थ विद्यार्थी के अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें अपने अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है।

इसलिए, इस इकाई में, हम विद्यार्थी, स्व-अधिगम या स्व-निर्देशित अधिगम, प्रभावी स्व-अधिगम हेतु आवश्यक कौशल तथा स्व-निर्देशित अधिगम में सहायक विधियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण आयामों के बारे में चर्चा करेंगे।

9.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आपः

- दूरस्थ शिक्षार्थी (वयस्क) की विशेषताओं का वर्णन कर पाएँगे;
- दूरस्थ विद्यार्थी की समस्याओं और अपेक्षाओं का विश्लेषण कर पाएँगे;
- स्व-निर्देशित अधिगम की अवधारणा को परिभाषित कर पाएँगे;
- स्व-निर्देशित अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा कर सकेंगे;
- प्रभावी स्व-अधिगम हेतु आवश्यक संप्रेषण कौशलों और अध्ययन कौशलों की व्याख्या कर पाएँगे; और
- स्व-अधिगम को सुगम बनाने हेतु संप्रेषण प्रौद्योगिकी तथा अन्य की भूमिका को समझ सकेंगे।

9.2 दूरस्थ विद्यार्थी

उच्च शिक्षण प्राप्त करने वाले दूरस्थ विद्यार्थियों की एक जानी पहचानी विशेषता यह है कि वे परिपक्व वयस्क होते हैं जो पृथकत्व में सीखते हैं। कई और सामान्य विशेषताएँ हैं जो एक विद्यार्थी से दूसरे विद्यार्थी में भिन्न हो सकती हैं। आइए, इन कुछ विशेषताओं पर एक दृष्टि डालें।

9.2.1 अभिलक्षण

भारतीय दूरस्थ विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण सामान्य अभिलक्षण निम्नलिखित हैं :

i) आयु

यद्यपि, दूरस्थ विद्यार्थी सामान्यतः वयस्क होते हैं इनकी वयस्कता 18 वर्ष से 80 वर्ष तक या इससे अधिक आयु के मध्य होती है। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा का एक विशिष्ट सबल पक्ष इसका लचीलापन है जो सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखती है। परंतु इस लचीलापन को समझने तथा ठोस व्यावहारिक रूप से प्रयोग में लाने की आवश्यकता है।

दूरस्थ विद्यार्थियों का भिन्न-भिन्न आयु वर्ग अनुदेशात्मक स्वरूपकर्ता के समक्ष गंभीर शैक्षणिक प्रश्न रखेगा जिन्हें अलग-अलग विद्यार्थियों के अधिगम शैलियों के साथ-साथ अलग-अलग आयु वर्ग को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है। अलग-अलग आयु वर्ग के लिए विषयवस्तु का चयन, इसकी कठिनाई का स्तर, परीक्षण अवधि तथा अनुसूची इत्यादि का निहितार्थ होगा। उदाहरण के लिए, ऐसे विद्यार्थी जो तीस या चालीस वर्ष की आयु वर्ग में हैं वे किशोरों तथा अन्य आयु वर्ग की अपेक्षा अधिक ग्राह्यशील तथा वांछित विषयों या वांछित क्षेत्रों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से संभालने के लिए भावात्मक स्थिरता का परिचय देंगे। यद्यपि तकनीकी रूप से सभी वयस्क हैं। दूसरी ओर चालीस वर्ष और उससे अधिक आयु वाले ज्ञानी तथा परिपक्व विद्यार्थी शायद निर्धारित समय सीमा (3 घंटे) में परीक्षा में उत्तर लिखने में समस्या का सामना करें, जब तक कि वह नियमित रूप से लिखने की यांत्रिक और मनोगत्यात्मक कौशल का अभ्यास न करें। यहाँ बीस और पच्चीस वर्ष के मध्य आयु वाले विद्यार्थी उनसे अधिक परिपक्व वयस्क के सापेक्ष शीघ्रता और आसानी से परीक्षा में उत्तर लिख सकते हैं। इस प्रकार आयु एक महत्वपूर्ण कारक है जो

कार्य भार, शिक्षण-अधिगम युक्तियों, परीक्षा पैटर्न और कार्यक्रम तथा अन्य के निर्धारण को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न आयु वर्ग के विद्यार्थियों के लिए सहायक सेवाओं की व्यवस्थापन को भी प्रभावित कर सकता है। विद्यार्थी सहायता से सम्बन्धित मुद्दों पर हम बाद में चर्चा करेंगे।

ii) जेण्डर

दूरस्थ विद्यार्थियों को आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने तथा समझ बनाने में जेन्डर एक महत्वपूर्ण कारक है। अर्थात् सामान्यतः सभी महिलाएँ जेन्डर भेदभाव से ग्रसित हैं तथा विशेष रूप से सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्ग की महिलाओं के प्रति भेदभाव किया जाता है। प्रायः या तो जेन्डर भेदभाव के प्रति उदासीन रवैया अपनाया जाता है या "क्रीमी लेयर" वाली महिलाओं से सम्बन्धित मुद्दों को जेन्डर मुद्दों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाएँ और महिलाएँ, शहरी झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाली तथा जनजाति क्षेत्रों की महिलाएँ एवं बालिकाएँ भारत के एक वृहत संख्या में अशिक्षित जनता को निरूपित करती हैं तथा यह स्थिति प्रदर्शित करती है कि जेन्डर सम्बन्धित मुद्दों को नीति निर्धारकों तथा संस्थागत नेताओं द्वारा भली-भाँति हल करने का अभी तक प्रयास नहीं किया गया है। यद्यपि महिलाओं के विरुद्ध किए गए पक्षपात पूर्ण व्यवहार समाज के सभी वर्गों की महिलाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। शहर के मध्यम वर्गीय तथा धनाढ्य वर्ग की महिलाएँ तुलनात्मक रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं, शहरों में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाली तथा असंगठित क्षेत्रों में कार्य करने वाली महिलाएँ, अनेक प्रकार के भेदभाव का सामना करती हैं तथा उन्हें मिलने वाले लाभों से वंचित किया जाता है। इन्हें दूरस्थ शिक्षण संस्थानों की ओर से सबसे अधिक सहायता की आवश्यकता है। दर्शनशास्त्र के स्तर पर, भाषा आधारित जेन्डर भेदभाव जहाँ 'he' और 'she' के रूप में संबोधित किया जाता है, के बजाय जेन्डर आधारित अधिक गंभीर मुद्दों के हल निकालने पर ध्यान देने की आवश्यकता है। महिलाओं को समाज के विभिन्न स्तरों पर जो स्थान दिया जाता है जैसे पाठ्यचर्या सम्बन्धी मुद्दों को निर्धारित करते समय उन्हें स्थान दिया जाना, भावनात्मक और मानसिक अवरोध जो महिलाओं के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान महिलाओं की भागीदारी में प्रतिबंध लगाता है, घर और कार्य स्थल का भयपूर्ण वातावरण या असहयोग की भावना, सांस्कृतिक और धार्मिक भेदभाव जिसके कारण महिलाओं की भागीदारी को प्रतिबंधित किया जाता है तथा महिलाओं का स्वयं के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण तथा पाठ्यक्रम और कार्यक्रम का चयन कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के विकास के प्रारंभिक दौर से उनके कार्यान्वयन के माध्यम से ध्यानपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

iii) सामाजिक स्थिति

भारत जैसे देश में शिक्षार्थियों की विविधता में जाति और वर्ग के स्तर पर सामाजिक भिन्नता सम्मिलित है। जाति पदानुक्रम भारत के लिए अद्वितीय है। यद्यपि इसका ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व है, भारत में जाति व्यवस्था लोकतांत्रिक शिक्षा तथा जनता में एक लोकतांत्रिक, वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष और विश्व परिदृश्य का विकास करने में नकारात्मक भूमिका निभाती रही है। दूरस्थ शिक्षा ने जनता के शैक्षणिक अवरोधों को तोड़ने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पहले शिक्षा की सामाजिक अवरोधों को तोड़ना होगा। एक निश्चित व्यवसाय और इससे सम्बन्धित कौशलों के बारे में परंपरागत विचार को अन्य व्यवसाय और शैक्षणिक कार्यक्रम के चयन के रास्ते में रुकावट उत्पन्न नहीं करनी चाहिए। उदाहरण के लिए चर्मकार और मिस्त्री अपने कौशल को बेहतर बनाने के लिए दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में भाग ले सकते हैं, परंतु उन्हें यह कभी महसूस नहीं होना चाहिए कि वे अपना व्यवसाय नहीं बदल सकते तथा अपने मनपसंद अन्य अधिगम कार्यक्रम का चयन नहीं कर

सकते हैं। समाज के वंचित वर्गों जैसे महिलाएँ, पिछड़ी जाति के सदस्य, अनुसूचित जाति व जनजाति, धार्मिक अल्पसंख्यक तथा दिव्यांग के शैक्षणिक रूचियों और अधिगम क्षमताओं के विरुद्ध प्रायः सामाजिक पूर्वाग्रह कार्य करते हैं। इस प्रकार के तथा अन्य सामाजिक कारकों से अवश्य निपटना चाहिए जब हम दूरस्थ शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर के बारे में बात करते हैं।

iv) आर्थिक स्थिति

सामान्यतः सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति और शैक्षणिक स्थिति साथ-साथ होंगे क्योंकि वे अधिकांशतः सहसम्बन्धित होते हैं। यद्यपि, यह सामान्यतः सत्य है कि भारत में कुछ निश्चित अनूठापन है। ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण हैं जो बेहतर सामाजिक स्थिति और उच्च शैक्षणिक शक्ति रखते हैं परंतु वे अपनी शैक्षणिक शक्तियों को विकसित नहीं कर सकते क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति निम्न है। अलग-अलग फीस संरचना तथा संस्था के अनुदान की नीतियों को विद्यार्थी के आर्थिक स्थिति का ध्यान रखना चाहिए। सामान्य रूप में ग्रामीण निर्धन तथा सामाजिक रूप से पिछड़े व्यक्ति अपनी शिक्षा के लिए पर्याप्त धनराशि नहीं जुटा पाते हैं। यह पहलू उनके उच्च व्यावसायिक और रोजगारपरक पाठ्यक्रम तक उनकी पहुँच के लिए महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, प्रबंधन पाठ्यक्रम, कम्प्यूटर साइंस तथा अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम के लिए अच्छा बाजार उपलब्ध है लेकिन उनकी फीस भी बहुत अधिक है। निर्धन विद्यार्थी और बेरोजगार व्यक्ति इन पाठ्यक्रमों की फीस नहीं दे सकते हैं अतः ये पाठ्यक्रम उनकी पहुँच से बाहर हैं। स्वाभाविक रूप से दूरस्थ शिक्षण संस्थानों द्वारा इस प्रकार के पाठ्यक्रम आर्थिक रूप से समृद्ध व्यक्तियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इस प्रकार के उच्च वर्गीय आवश्यकताओं को आर्थिक रूप से पिछड़े विद्यार्थियों को रोजगारपरक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के योग्य बनाने हेतु छात्रवृत्ति, अनुदान, फीस माफी आदि के रूप में उपयुक्त नीति परिवर्तन के साथ संतुलित करना चाहिए।

v) शैक्षणिक स्थिति

शैक्षणिक स्थिति से हमारा आशय एक परिवार या समुदाय में व्याप्त शैक्षणिक वातावरण से है। भारत में आज भी यह असामान्य नहीं है कि हम ऐसे परिवार/ समुदाय/जाति को देखते हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं परंतु शैक्षणिक रूप से समृद्ध होते हैं। इन परिवारों/समुदायों के व्यक्ति अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं, यदि इन्हें आवश्यक आर्थिक सहायता प्रदान की जाए। दूसरी ओर, कुछ क्षेत्र विशेष ऐसे नवधनाढ्य और सामुदायिक हैं जिन्हें शिक्षा की मुख्यधारा से परंपरागत रूप से अलग रखा गया है को यदि छात्रवृत्ति या फीस छूट या संपूर्ण फीस माफी के रूप में कुछ सहायता राशि दी जाए तो भी उनसे उनके अध्ययन में अच्छा प्रदर्शन की आशा नहीं रख सकते हैं। प्रथम पीढ़ी के अधिकांश विद्यार्थियों में अपने पढ़ाई में अच्छे प्रदर्शन के लिए आवश्यक आत्मविश्वास और चतुराई का अभाव होता है विशेष कर जब वे दूरस्थ शिक्षा विधि की माध्यम से सीखते हैं। ऐसी स्थिति में उच्च आर्थिक स्तर भी विद्यार्थी की अधिक सहायता नहीं करेगा। इसलिए दूरस्थ शिक्षाविदों के लिए परिवार, समुदाय और क्षेत्र का शैक्षणिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या मुद्दा बन जाता है।

vi) भौगोलिक स्थिति

शहरी और ग्रामीण विभाजन एक बहुत बड़ा मुद्दा है जो शैक्षणिक अवसरों तथा इसके माध्यम से विद्यार्थी के अधिगम परिणाम का निर्धारण करता है। शहरी विद्यार्थी को सदैव आसानी से सूचना प्राप्त करने का लाभ प्राप्त होता है। तुलनात्मक दृष्टि से उन्हें बेहतर शैक्षणिक संस्थान मिलते हैं तथा उनके पास बेहतर शैक्षणिक अन्तःक्रिया के लिए सहपाठी समूह बनाने

के अवसर होते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा संस्थान और कार्यक्रम/पाठ्यक्रम के बारे में सूचना प्राप्त करना विद्यार्थियों के लिए कठिन होता है। उन्हें समय, यात्रा जैसी कठिनाई का सामना करना पड़ता है जब भी वे अध्ययन केन्द्र आधारित सहायता सेवा का उपयोग करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें अस्थायी रूप से शहरी क्षेत्र में स्वयं को स्थानांतरित करना पड़ता है जो स्वयं में एक बहुत बड़ा व्यवधान है। भारत के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र सड़क और सहायता सेवा का उपयोग करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें अस्थायी रूप से शहरी क्षेत्र में स्वयं को स्थानांतरित करना पड़ता है जो स्वयं में एक बहुत बड़ा व्यावधान है। भारत के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र सड़क और डाकघर से नहीं जुड़े हुए हैं, तथापि वहाँ तक रेडियो, टेलीविजन तथा टेलीफोन की पहुँच है।

भौगोलिक दृष्टि से दूरदराज और पहाड़ी क्षेत्रों में विद्यार्थी फैले हुए हैं तथा उन्हें विशेष संचार व्यवस्था की आवश्यकता होती है। कई पहाड़ी जनजाति तथा जिनकी नियुक्ति दुर्गम क्षेत्रों में अत्यंत विकट वातावरण में हुई है (जैसे सेना, विशेष सेवा के लिए नियुक्त व्यावसायिक) उन्हें अपनी शिक्षा या अपने व्यावसायिक क्षमतावर्धन कार्यक्रम हेतु विशेष सुविधा और व्यवस्था की आवश्यकता होती है। दूरस्थ विद्यार्थी की भौगोलिक स्थिति को दूरस्थ शिक्षण संस्थानों की नीतियों और कार्य प्रणाली पर छाप होनी चाहिए।

vii) अन्य अभिलक्षणात्मक मुद्दे

उपर्युक्त वर्णित कारकों के अतिरिक्त कुछ और महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जो हमें दूरस्थ विद्यार्थियों और उनकी आवश्यकताओं की विशेषताओं के बारे में जानकारी देते हैं। निम्नलिखित का विवरण करना आवश्यक है।

क) भाषाई कौशल : द्विभाषी और बहुभाषी स्थिति में अपने पाठ्यक्रम के माध्यम से सफलतापूर्वक सीखने के लिए विद्यार्थी के लिए भाषायी कौशल अत्यंत आवश्यक है। भारत में उच्च शिक्षा स्तर पर अधिकांश पाठ्यक्रम अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पढ़ाए जाते हैं जोकि अधिकांश भारतीयों की मातृभाषा नहीं है। इसलिए दूरस्थ विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा का निम्नतम स्तर की आवश्यक दक्षता होना चाहिए। दूसरी ओर, लेखक के पास आवश्यक लेखन कौशल और क्षमता होना चाहिए जब वे अनुदेशन के माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम निर्माण करते हैं। यदि सम्बन्धित संस्थान विद्यार्थियों की मातृभाषा (अर्थात् हिन्दी, तेलगू, तमिल, बंगाली, मराठी तथा अन्य भारतीय भाषाओं) के माध्यम से पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने का निर्णय लेते हैं तो उन्हें सुनिश्चित करना चाहिए कि सम्बन्धित भाषा में ज्ञान का पर्याप्त आधार हो जिससे विद्यार्थियों को पर्याप्त ज्ञान और सूचना के साथ तैयार किया जा सके ताकि वे अंग्रेजी माध्यम से अध्ययन पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों के साथ तुलना और प्रतिस्पर्धा कर सकें। यहाँ पर मुख्य मुद्दा उचित स्तर पर स्वीकार्य मानदंड के साथ पाठ्यक्रम निर्माण करना है तथा सम्बन्धित भाषाओं में अतिरिक्त अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना है। सामान्य रूप से भारत में दूरस्थ शिक्षा और शिक्षाविदों के लिए यह एक प्रमुख चुनौती है।

ख) शैक्षणिक परंपराएँ : अत्यधिक मौखिक परंपराओं और शिक्षक के लिए उच्च सम्मान देने वाले समाज में विद्यार्थी शिक्षक के द्वारा शिक्षण की अपेक्षा करता है बजाय अध्ययन सामग्री के माध्यम से स्वयं सीखना। भारत को इसके गुरु-शिष्य परंपरा के लिए जाना जाता है तथा यह परंपरा अभी भी कैम्पस आधारित शिक्षण संस्थानों में कुछ रूपों में जारी है तथा ललित कलाओं जैसे शास्त्रीय संगीत, नृत्य, पेन्टिंग और मूर्तिकला में कक्षाएँ चलाई जाती हैं। दूरस्थ विद्यार्थी अचानक ही एक भिन्न शिक्षण-अधिगम स्थिति का सामना करता है जो विद्यार्थी पर अधिगम की जिम्मेदारी सौंप देता है। जब अचानक ही "शिक्षण" से "अधिगम" शैली में जाना होता है तब दूरस्थ विद्यार्थियों को

सांस्कृतिक झटका लगता है। यह झटका और तीव्र होता जाता है जब उन्हें बहुत थोड़े तैयारी या खराब सहायता सेवा के लिए तकनीक आधारित या डिजीटल आधारित दूरस्थ शिक्षा प्रदान की जाती है। इनमें से कुछ मुद्दों ने दूरस्थ शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित किया है। सन् 1998 में एशियाई मुक्त विश्वविद्यालय संघ ने हांगकांग में आयोजित अपने वार्षिक सम्मेलन में "एशियाई दूरस्थ विद्यार्थी" को थीम के रूप में चुना। ओटो पीटर्स (1998) ने एशिया में दूरस्थ अधिगम से सम्बन्धित कई सैद्धान्तिक और शैक्षणिक मुद्दों के माध्यम से एशियाई दूरस्थ विद्यार्थी पर चिंतन किया। दूरस्थ विद्यार्थियों द्वारा सामना किए जा रहे अधिगम सम्बन्धी कई समस्याओं का हल उपलब्ध कराने तथा एशियाई मुक्त एवं दूरस्थ विद्यार्थी की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तकनीकी सहायता और दूरस्थ विद्यार्थी की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सामग्री और तकनीकी सहायता तथा संस्थागत सहयोग, पहुँच जैसे मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करने के साथ थीम को गंभीरता से लिया गया।

ग) **अक्षमता वाले विद्यार्थी :** कई प्रकार के अक्षमता वाले विद्यार्थियों को कई प्रसिद्ध दूरस्थ शिक्षण संस्थानों जैसे मुक्त विश्वविद्यालय, यू.के.; फर्न विश्वविद्यालय, जर्मनी; हांगकांग मुक्त विश्वविद्यालय, चीन; हैडली स्कूल ऑफ ब्लाइंड, यू.एस.ए. तथा अन्य ने विशेष रूप से ध्यान आकर्षित किया। मुक्त विश्वविद्यालय, यू.के., फर्न विश्वविद्यालय, जर्मनी; हांगकांग, चीन, जापान, यू.एस.ए., कनाडा के दूरस्थ शिक्षण संस्थानों तथा अन्य विकसित देशों में अक्षमता वाले विद्यार्थियों की बहुत बड़ी संख्या है तथा उन्होंने विशेष योग्यता वाले विद्यार्थियों के लिए सफलतापूर्वक अपना पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए विशेष व्यवस्था की है। भारत में विशेष रूप से इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुकत विश्वविद्यालय (इग्नू) ने अक्षमता वाले विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न तरीकों से, जैसे शुल्क में छूट, विशेष अध्ययन केन्द्र, समर्थ बनाने वाली तकनीकें, उपयुक्त मीडिया में अध्ययन सामग्री तथा विशेष आवश्यकता आधारित पाठ्यक्रम और कार्यक्रम करने का प्रयास किया है। यद्यपि, अक्षमता वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति, दूरस्थ शिक्षा संस्थानों द्वारा एक महत्वपूर्ण तरीके से करना बाकी है। शारीरिक अपंगता (चलने फिरने में) दृष्टिहीनता, श्रवण बाधित, मानसिक मंदता, तथा विभिन्न प्रकार की अधिगम अक्षमता की ओर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है जब हम दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के विकास और उनका क्रियान्वयीकरण करते हैं।

घ) **अधिगम शैली**: अधिगम शैली की एक व्यापक परिभाषा, जिसे शिक्षा जगत के अग्रणी विचारकों द्वारा अपनाया गया है, कीफे (1989) द्वारा दिया गया तथा ग्रिग्स (1991) द्वारा उद्धृत किया गयाः "विशिष्ट संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक के संयोजन कारक जो अपेक्षाकृत स्थिर संकेतक के रूप में काम करते हैं, जो कि सीखने वाले अनुभव करते है, अंतःक्रिया करते हैं सीखने के माहौल के साथ और जवाब देते हैं।" विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषायी और अन्य पृष्ठभूमि के आधार पर विभिन्न विद्यार्थी अलग-अलग शिक्षण शैली के आदी हो जाते हैं। उनका अधिगम शैली उनके संयुक्त संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोवैज्ञानिक कारक जो विद्यार्थी किस प्रकार अधिगम वातावरण को महसूस करते हैं, उसके साथ अन्तःक्रिया करते हैं तथा प्रत्युत्तर देते हैं, का पूर्णतया स्थायी सूचक के रूप में कार्य करता है। तदनुसार उनके अधिगम शैली में भिन्नता होना स्वाभाविक है। किट लोगान और पीट थॉमस (http://www.ppig.org/papers/14th-logan.pdf) ने दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों के पसंदीदा अधिगम शैली का अध्ययन किया जैसे कि एक अनुभवजन्य (Activist style), एक अनुभव का समालोचना करना (Reflector style), एक अनुभव से निष्कर्ष प्राप्त करना (Theorist style), अगले चरण की योजना बनाना (Pragmatist style)।

ग्रेषा और रीचमैन की *स्टूडेंट लर्निंग स्टाइल्स स्केल* (ग्रेषा, 1996) छः शैली प्रस्तुत करता हैः स्वतंत्र, अनिच्छुक, सहयोगात्मक, निर्भर, प्रतिस्पर्धात्मक और प्रतिभागी। इस प्रकार कुछ विद्यार्थियों की अधिगम शैली प्रतिस्पर्धात्मक होगा तो अन्य का सहयोगात्मक, अनिच्छुक, प्रतिभागी, निर्भर, स्वतंत्र, इत्यादि होगा। इसलिए अधिगम अनुभव को दूरस्थ शिक्षक द्वारा विविधतापूर्ण करने की आवश्यकता है ताकि अलग-अलग वर्ग के विद्यार्थियों के अलग-अलग अधिगम शैली की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1) भारतीय दूरस्थ विद्यार्थियों की प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (इस इकाई में आपने जो पढ़ा उसके अतिरिक्त आप अपने अनुभव के आधार पर भी उत्तर लिख सकते हैं)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.2.2 समस्याएँ

अभी तक की चर्चा से आप आसानी से समझ चुके हैं कि दूरस्थ विद्यार्थियों के विविध और जटिल पाठक वर्ग की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना कितना चुनौती भरा कार्य है। इस प्रकार की संरचना के कारण दूरस्थ विद्यार्थी समूह के पास अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ होगी जो आसान या एक समान हल की अवहेलना करेगी। विद्यार्थियों की समस्याओं का हल करने का प्रयास करते समय दूरस्थ शिक्षाविद विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लचीला, व्यावहारिक और उपयुक्त युक्तियों के बारे में विचार अवश्य करें। आइए, एक नजर उन समस्याओं पर डालते हैं जिसका सामना प्रायः दूरस्थ विद्यार्थीगण करते हैं।

दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम पर कॉमनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सीओएल) की निर्देश पुस्तिका (1997) दूरस्थ विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को निम्नलिखित रूप में बताता हैः

- अलगाव
- अध्ययन व्यवस्था और अध्ययन स्थान का आयोजन
- अध्ययन हेतु पर्याप्त समय की प्राप्ति
- कार्य, परिवार और अध्ययन के मध्य संतुलन करना
- प्रेरणा का अभाव

- संसाधन और उपकरण का अभाव
- अध्ययन तकनीक (या अध्ययन कौशल) का अभाव

यह दूरस्थ विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं जैसे "सूचना", "संपर्क", (अर्थात् संस्था/शिक्षक/अनुशिक्षक/परामर्शदाता से संपर्क), "संस्थागत पहचान" तथा ''किस प्रकार अध्ययन करें पर सलाह" का भी वर्णन करता है। विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को हल करने हेतु तथा उनकी विशेष आवश्यकताओं (विशेष शिक्षा के संदर्भ में नहीं) का ध्यान रखने के लिए, परामर्श सत्र, अनुशिक्षण तथा प्रशासनिक सहायता की सिफारिश, विद्यार्थी अधिगम के विभिन्न स्तरों – पूर्व नामांकन स्तर, अध्ययन का प्रारंभिक स्तर, अध्ययन के दौरान तथा समाप्ति के पश्चात् स्तर – पर की जाती हैं। इसे पूर्ण करने के लिए युक्तियाँ किस प्रकार निर्मित करना है, विशिष्ट स्थितियों या जिस संदर्भ में उन्हें अपनाए जाने की आवश्यकता है के आधार पर निर्भर करेगा।

प्रश्नः "विद्यार्थी क्यों नहीं सीखते हैं?" (ग्रिब्स और अन्य, 1982) का उत्तर देते समय वे निम्नलिखित सामान्य रूप से दी जाने वाली व्याख्या पर प्रश्न करते हैं :

- विद्यार्थियों में आवश्यक अध्ययन कौशल का अभाव;
- विद्यार्थियों के अलग-अलग प्रकार हैं तथा कुछ विद्यार्थियों के पास पढ़ाई के लिए सीमित उपागम हैं;
- पढ़ाई के लिए विद्यार्थीगण अपने उपायों का चयन करते हैं तथा कुछ विद्यार्थीगण अनुपयुक्त या परावर्तक;
- विद्यार्थीगण अपने परिष्करण में एक विद्यार्थी के रूप में विकास करते हैं तथा कुछ विद्यार्थी अन्य के मुकाबले कम विकसित होते हैं; तथा
- पाठ्यक्रम डिजाइन के कुछ आयाम विद्यार्थियों को उनके अध्ययन में दिक्कत करते हैं।

उपरोक्त व्याख्या की सत्यता का विश्लेषण तथा परीक्षण करके गिब्स और अन्य (1982) ने निष्कर्ष निकाला किः ''कमजोर विद्यार्थियों को किसी निश्चित कौशल के अभाव के रूप में देखना सहायक नहीं हो सकता ... ... विद्यार्थियों को एक निश्चित अधिगम शैली से सीखने वाले विद्यार्थी के रूप में देखना सहायक नहीं हो सकता ... ... कुछ हद तक विद्यार्थीगण सजग व सक्रिय रूप से अपने अध्ययन उपागम का चयन करते हैं ... ...। कुछ हद तक (वे) विद्यार्थी के रूप में विकसित प्रतीत होते हैं कि वे अधिगम प्रक्रिया तथा ज्ञान के प्रकृति के अत्यधिक परिष्कृत अवधारणाओं का विकास करते हैं। यहाँ तक कि कौशलयुक्त परिष्कृत विद्यार्थी भी सीमित रूप से सतही अधिगम प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो सकता है (बाह्य प्रतिबंधों के कारण जैसे बृहत आकार की पाठ्यचर्या, आँकलन व्यवस्था की माँग, अभिरूचि के पृष्ठभूमीय ज्ञान का अभाव''।

उपर्युक्त शोध परिणाम पूर्व से ही दूरस्थ विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं और कठिनाइयों तथा विशेषताओं के बारे में सरल सामान्यीकरण की परिसीमन की ओर इंगित करता है, जिनके पास अलग प्रकार का अनुकूलन, आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि, रूचि, अध्ययन कौशल, अधिगम कौशल इत्यादि के रूप में हो सकता है। तथापि, दूरस्थ शिक्षक, अनुशिक्षक, परामर्शदाता तथा शैक्षणिक संस्थान सकारात्मक हस्तक्षेप के माध्यम से निश्चित रूप से दूरस्थ विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से निपटने में सहायक होगा। इसके अतिरिक्त दूरस्थ विद्यार्थीगण अन्य समस्याओं का सामना करते हैं जिनके हल उनके

स्वयं के रहने व कार्य करने के परिवेश से मिल सकता है। उदाहरण के लिए, दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए नियमित अध्ययन समय ढूँढ़ना तथा दैनिक कार्यों को व्यवस्थित करना प्रत्यक्ष रूप से दूरस्थ शिक्षण संस्थान द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, यद्यपि, शैक्षणिक परामर्शदाता द्वारा विद्यार्थियों की अध्ययन आदत को व्यवस्थित करने के लिए कुछ दिशा-निर्देश या सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। परंतु, अधिकांश स्थिति में, विद्यार्थियों को उनके अनुकूल अपने लिए अध्ययन समय और स्थान का निर्धारण स्वयं करना होगा।

कार्य करने वाले/रोजगार वाले वयस्क विद्यार्थी के लिए सुबह का समय तथा घर-आधारित अध्ययन हमेशा आसान नहीं हो सकता है। शाम तथा छुट्टी वाले दिन उनके लिए घर पर अध्ययन करना आदर्श होगा। कार्य दिवसों में अपने कार्य स्थल में मुक्त समय में या यात्रा करते समय वे छपे हुए पाठों को पढ़ सकते हैं। यद्यपि, इन व्यवस्थाओं को उनके व्यावसायिक और घरेलू जिम्मेदारियों के अनुसार समायोजित करना होगा। अतः आपके लिए भी अध्ययन के लिए समय निकालना प्रत्यक्ष रूप से आपके अभिप्रेरणा और आपके कार्यक्रम के समायोजन से सम्बन्ध रखता है। आपने महान व्यक्तियों की आत्मकथा अवश्य पढ़ी होगी जो कार्यक्रमों में बहुत ही अधिक व्यस्त रहते थे। इसके बावजूद भी वे पढ़ने के लिए समय निकाल लेते थे। आप अपने मित्रों, सहपाठियों और परिचित से प्रेरणा ले सकते हैं जो अपने व्यस्त कार्यक्रमों तथा कई जिम्मेदारियों के बावजूद अपनी पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

उपर्युक्त चर्चा के बाद हमें स्वीकारना होगा कि गंभीर अध्ययन के लिए उपयुक्त व्यवस्था की आवश्यकता होती है। आपको अपनी अध्ययन सामग्री और पुस्तकों तथा टिप्पणियों को व्यवस्थित ढंग से रखने के लिए स्थान चिह्नित करें ताकि जब भी आप अपनी अध्ययन मेज की ओर देखेंगे तो आपको एक सकारात्मक और सुखद अनुभूति होगी। अपनी पुस्तक, कापियों और नोट्स को मेज पर अस्त-व्यस्त न रखें। केवल उन्हीं पुस्तकों और कागजों को मेज पर रखें जिनकी आवश्यकता आपको अपनी पढ़ाई के समय हो। यदि आपकी अध्ययन मेज अस्त-व्यस्त होगी तो आपको अपनी पढ़ाई में एकाग्रता बनाने में कठिनाई होगी।

आपकी पढ़ाई और कार्य के मध्य समायोजन रखना चुनौतीपूर्ण कार्य है। हम जानते हैं कि दूरस्थ विधि के माध्यम से किसी का अध्ययन सफलतापूर्वक पूर्ण करना कितना कठिन है। परंतु उचित योजना और कड़ी मेहनत आपकी सफलता को सुनिश्चित करेगी। आपको अपनी प्राथमिकताओं को सही क्रम में रखना चाहिए। मान लीजिए, आपको एक विशेष तिथि को अपना सत्रीय कार्य जमा करना है, परंतु आप किसी अन्य कार्य को रूचिकर पाते हैं जैसे एक ऐसा पाठ पढ़ना जो आपके वर्तमान सत्रीय कार्य से सम्बन्धित नहीं है। ऐसे क्षणों में आपको सत्रीय कार्य करने का स्थगन के प्रलोभन का विरोध करना चाहिए। कभी-कभी आपके अध्ययन पूर्ण करने में एक वर्ष का विलम्ब हो सकता है।

दूरस्थ अधिगम प्रक्रिया में उदासीन होना तथा अकेलापन का अहसास होना सामान्य बात है। कभी-कभी विषयवस्तु की समझ में कठिनाई या सत्रीय कार्य का उत्तर देने में कठिनाई आपको हतोत्साहित कर सकती है। या आपके घर के कोई सदस्य आपकी पढ़ाई के बारे में नकारात्मक टिप्पणी करता है। जब आप अपने सत्रीय कार्य को पूर्ण करने तथा अपने कार्यालय के कार्य को पूर्ण करने के लिए आपके ऊपर दबाव हो उसी समय आपके बच्चे आपसे आपके समय की माँग करते हैं। मित्र और सम्बन्धी बिना बताए आपके घर पर आ जाते हैं तथा आपके अत्यधिक व्यस्तता की संकेत नहीं ले सकते और अवहेलना कर देते हैं। आपका सांस्कृतिक परिवेश आपके अध्ययन के लिए शायद अनुकूल न हो। उदाहरण के लिए, आपके सगे-सम्बन्धी आपको आगे पढ़ाई में समय बर्बाद न करने के लिए कहते हों परंतु आप अपने व्यवसाय की देखभाल करने के लिए समय दें। ऐसी स्थिति में आपको

हतोत्साहित करने वाली टिप्पणियों और बेतुके प्रश्नों की उपेक्षा कर देना आपके लिए बेहतर होगा। परंतु वास्तविक जीवन स्थिति में हम तीव्रता से प्रतिक्रिया करते हैं जब हमें कोई पढ़ाई से रोकने अथवा हतोत्साहित करने का प्रयास करता है। अनुभव के साथ हम ऐसी स्थितियों से, बिना अपनी पढ़ाई की अवहेलना करके, निपटना सीख जाते हैं।

दूरस्थ शिक्षण संस्थाएँ विशेष रूप से दूरस्थ शिक्षाविद् तथा शैक्षणिक परामर्शदाता विद्यार्थियों के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को हल करने में उनकी सहायता कर सकते हैं। बहुत-सी बातें सम्बन्धित संस्थानों के दूरस्थ अधिगम के विशेष गुणों को बनाए रखने की योग्यता, दूरस्थ विद्यार्थियों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं का पूर्वानुमान करना तथा शैक्षणिक कार्यक्रम तथा उपयुक्त रूप से सहायक सेवाओं की योजना बनाने के योग्यता के ऊपर निर्भर करता है। दूरस्थ विद्यार्थियों का सफल और असफल होना, बहुत हद तक, विद्यार्थियों को उनके अध्ययन में सहज और सुगम बनाने में संस्था की तैयारी, जवाबदेही तथा समझ के स्तर पर अत्यधिक निर्भर करता है। संस्था की गुणवत्ता सम्बन्धी मुद्दे उन्हें विद्यार्थियों की चिंताओं और रूचियों, पाठ्यक्रम से सम्बन्धित सभी क्रियाकलापों, पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम विकास, पाठ्यक्रम प्रदायन, मूल्यांकन तथा विभिन्न प्रकार की विद्यार्थी सहायता सेवाओं का ध्यान रखने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

अगले उपभाग में हम दूरस्थ विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने के कुछ तरीकों तथा दूरस्थ अधिगम में रूचि बनाए रखने के तरीकों पर चर्चा करेंगे।

9.2.3 अपेक्षाएँ

आप पहले भागों में पढ़ चुके हैं कि दूरस्थ विद्यार्थी किस प्रकार का प्रयास करते हैं तथा अपने अध्ययन को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए उन्हें किस प्रकार की कठिनाई का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों को उनकी पढ़ाई में आई कठिनाइयों से निपटने के लिए उन्हें सक्षम बनाने हेतु विभिन्न प्रकार की संस्थागत सहयोग की पूर्ण रूप से आवश्यकता है। वास्तव में, "निजी अध्ययन" और "दूरस्थ मुक्त अधिगम" के मध्य अंतर को "दूरस्थ मुक्त अधिगम" के दूरदराज के दूरस्थ विद्यार्थियों को सहायता और अधिगम वातावरण उपलब्ध करने के प्रयास के संदर्भ में देखना चाहिए। हम कुछ महत्वपूर्ण सहयोग के बारे में चर्चा करेंगे जिसे विकासशील देशों के दूरस्थ विद्यार्थी सामान्यतः अपने दूरस्थ शिक्षक और संस्थाओं से अपेक्षा करते हैं।

i) **अभिप्रेरणा :** हम विद्यार्थी के कार्यक्रम/पाठ्यक्रम में नामांकन दर्ज करवाने की प्रेरणा के बारे में निश्चित हो सकते हैं। जब तक कि वे प्रेरित नहीं होंगे वे उन्हें पढ़ने का निर्णय नहीं लेंगे विशेष रूप से तब जब उन्हें अधिक मेहतन करके अर्जित की गई राशि कार्यक्रम/पाठ्यक्रम शुल्क के रूप में जमा करनी पड़ती है। परंतु केवल इस प्रकार का अभिप्रेरण ही उनके अध्ययन में सफल होने के लिए पर्याप्त नहीं है। उन्हें अलग प्रकार की अभिप्रेरणा की आवश्यकता है अर्थात् सत्रीय कार्यों के उत्तर देने में उनकी संलग्नता तथा पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं की आवश्यक पूर्ति करने की प्रेरणा। इस प्रकार की अभिप्रेरणा विद्यार्थियों को उनके अध्ययन में आई कठिनाइयों का सामना करने के लिए रूचि कायम रखना तथा पाठ्यक्रम अध्ययन से ड्राप आउट करने की इच्छा से बचने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास प्रदान करता है। "दूरस्थ विद्यार्थी" अपने अध्ययन वर्ष या प्रथम सेमेस्टर या प्रथम अवधि में ड्राप आउट होने का सबसे अधिक खतरा होता है" (राबर्ट्स, 1984)। दूरस्थ शिक्षक, अनुशिक्षक और परामर्शदाता की विभिन्न स्तर पर विद्यार्थी के ड्रापआउट करने के विचार को दूर करने में अभिप्रेरणा सहायक सिद्ध होगी जब कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कठिनाइयों

का अहसास हो – व्यक्तिगत या अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयाँ। प्रारंभिक दौर में प्रभावकारी प्रेरणा उपलब्ध कराई जा सकती है यदि संस्था को ज्ञात हो कि किस प्रकार विद्यार्थियों के लिए सहयोग स्थापित करें तथा उनमें अपनेपन की भावना का विकास करें। विद्यार्थी महसूस करें कि ''यह एक संस्था है जो मेरा ध्यान रखती है। मैं इससे सहायता प्राप्त कर सकता हूँ जब कभी भी मैं वास्तविक कठिनाई में रहूँगा''। इस प्रकार की अपनेपन की भावना विद्यार्थी के साथ संस्थागत सम्बन्ध के प्रारंभिक दौर में निर्मित की जानी चाहिए – पाठ्यक्रम के विज्ञापन के समय, विद्यार्थी को प्रवेशपत्र भेजते समय, प्रथम बार अध्ययन सामग्री भेजते समय तथा डिग्री प्रदान करते समय या उसके बाद भी। संस्थान और विद्यार्थी के मध्य सतत् अन्तःक्रिया अपनेपन की भावना, परस्पर विश्वास तथा अधिगम के लिए एक सकारात्मक वातावरण का विकास करेगी।

ii) **परिचालन सहयोग :** दूरस्थ विद्यार्थी की अभिप्रेरणा और रूचि कायम रखने का महत्वपूर्ण पहलू है कि एक संस्था किस प्रभावशीलता के साथ अपने कार्यों और परिचालन तंत्र को संभालता है। संस्था की छवि विद्यार्थी को अध्ययन करने हेतु प्रेरित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विज्ञापन देते समय पूर्व नामांकन स्तर पर सटीक और निश्चित समय पर पाठ्यक्रम और कार्यक्रमों के बारे में सूचना तथा नामांकन पूर्व परामर्श विद्यार्थी को उनके अधिगम युक्तियों के बारे में निर्णय लेने में सहायक होगी। समय पर प्रवेश, स्व-निर्देशित सामाग्री का प्रेषण का स्पष्ट कार्यक्रम, सत्रीय कार्य जमा करने की तारीख, परामर्श तथा अनुशिक्षा, तथा कार्यक्रमों का प्रभावी कार्यान्वयनीकरण, विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जागृत करता है तथा उन्हें कार्यक्रम पूरा करने के लिए प्रेरित करता है चाहे कार्यक्रम कठिन भी हो। एक कमजोर प्रशासन कुव्यवस्था फैलाता है जो विद्यार्थी को हतोत्साहित करता है, यद्यपि कार्यक्रम अच्छा तथा शैक्षणिक रूप से उपयोगी हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि विद्यार्थी के पास समय पर सामग्री नहीं पहुँची तो उसे निर्धारित समय में सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने में गंभीर समस्या का सामना करना पड़ेगा, वे अपने आपको परामर्श सत्र के लिए तैयार नहीं कर पाएँगे, इन सब कारणों तथा अन्य सम्बन्धित कठिनाइयों के कारण उनके अंतिम परीक्षा में प्रदर्शन प्रभावित होगा।

इसी प्रकार विद्यार्थी द्वारा जमा किए गए सत्रीय कार्य के उत्तर का आँकलन, टिप्पणी सहित समय पर वापिस किया जाना चाहिए। सत्रीय कार्य का उद्देश्य है विद्यार्थी को समय पर पृष्ठपोषण उपलब्ध कराकर विद्यार्थी को सिखाना है। परंतु प्रायः विद्यार्थी द्वारा सत्रीय कार्य के उत्तर देर से जमा कराये जाते हैं या सत्रीय कार्य का आँकलन अनुशिक्षक परामर्शदाता के द्वारा नहीं किया जाता है और न समय पर उसे विद्यार्थी को वापस किया जाता है। इस प्रकार के सतही पद्धति विद्यार्थी के अधिगम के लिए हानिकारक होगा तथा विद्यार्थी को सत्रीय कार्य देने का उद्देश्य भी विफल होगा।

दूरस्थ शिक्षा में एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य जो केन्द्रीय भूमिका निभाता है वह है अनुशिक्षण और परामर्श सत्र की आयोजन। अधिगम सामग्री का सबल पक्ष चाहे कुछ भी हो दूरदराज के दूरस्थ विद्यार्थी को शिक्षक और अपने सहपाठियों के साथ आमने-सामने बैठ कर बातचीत करने की आवश्यकता सदैव होगी। अनुशिक्षण और परामर्श सत्र इस प्रकार की बैठक की संभावना को बढ़ाता है। अनुशिक्षण और परामर्श सत्र एक मात्र मार्ग है जिसके माध्यम से विद्यार्थी मुक्त भाव से अनुशिक्षक और परामर्शदाता तथा अपने सहपाठियों के साथ अन्तःक्रिया कर सकता है, न केवल पाठ्यक्रम सामग्री से सम्बन्धित मुद्दों पर परंतु उनके अध्ययन व्यवस्था से सम्बन्धित मुद्दों पर भी बातचीत कर सकते हैं जो प्रायः उनके घरेलू और व्यावसायिक जिम्मेदारियों के साथ टकराव होता

है। इसलिए अनुशिक्षण और परामर्श सत्र की योजना व्यवस्थित ढंग से बनानी चाहिए ताकि विद्यार्थी की शैक्षणिक और भावनात्मक रूप से मदद की जा सके। परामर्शदाता की गुणवत्ता तथा विद्यार्थी के प्रति उनकी पहुँच प्रायः दूरस्थ शिक्षा में ड्राप आउट दर तथा दृढ़ाग्रह का निर्धारण करती है। एक सकारात्मक अनुभव विद्यार्थी को उनके अध्ययन को जारी रखने के लिए प्रेरित करता है जबकि एक नकारात्मक अनुभव उन्हें ड्राप आउट के लिए उकसाता है।

अंत में, सत्रांत परीक्षा के लिए तैयारी दूरस्थ विद्यार्थी के लिए अंतिम प्रमुख चुनौती होती है। जिसका सामना वे करते हैं, जिसका परिणाम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अध्ययन करने की सफलता तथा असफलता का निर्धारण करता है। समय पर परीक्षा का आयोजन करना, उत्तर पुस्तिका की जाँच करना, परिणाम की घोषणा करना तथा सही प्रमाणपत्र प्रदान करना सक्रिय और गंभीर विद्यार्थी को सबसे अधिक संतोष प्रदान करता है। परिचालन और प्रशासनिक प्रभावशीलता विद्यार्थी को अपने आगे की पढ़ाई और व्यावसायिक योजना के सम्बन्ध में सही समय पर निर्णय लेने में सहायता करेगी।

iii) **समस्याओं/कठिनाइयों का समयोचित हल :** निश्चित रूप से युवा विद्यार्थी माध्यमिक विद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्यालय से आते हैं तो वे अपने समाजीकरण और एक साथ विद्यालय कैम्पस से पढ़ने को युवा उत्साह को बहुत याद करते हैं जब वे, चाहे जो भी कारण हो, दूरस्थ शिक्षा का चयन करते हैं। सामान्य रूप से वे युवा दूरस्थ विद्यार्थी दूरस्थ अध्ययन के साथ बहुत अधिक आत्मविश्वास और सुखद अनुभव नहीं करते हैं। महिलाएँ, युवा गृहिणी, बेरोजगार युवा, वंचित परिवार से प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थी, विकलांग विद्यार्थी तथा सेवानिवृत्त व्यक्ति कई कठिनाइयों और भावनात्मक द्वंद के चपेट में आ सकते हैं तथा वे अत्यंत क्षीण असुविधा से अध्ययन से ड्राप आउट कर लेते हैं। यदि हम खराब प्रदर्शन या दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी की अरूचि के कारणों का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि अधिकांश कारण जो विद्यार्थी को हतोत्साहित करता है वे संस्था से सम्बन्धित होते हैं और इन कारणों को आसानी से दूर किया जा सकता है यदि संस्थागत दृढ़ इच्छा हो।

भारत में दूरस्थ विद्यार्थियों द्वारा सामना की जाने वाली सामान्यतः समस्या उनके प्रश्नों का उत्तर न मिलना है। जैसे संस्था द्वारा अध्ययन सामग्री विलम्ब से विद्यार्थी को भेजना या कुछ विद्यार्थियों को सामग्री का गलत पैकेट भेजा जाना। जब विद्यार्थी सम्बन्धित संस्था से इस संदर्भ में सहायता प्राप्त करना चाहता है तो प्रायः उन्हें संतोषजनक या स्पष्ट उत्तर प्राप्त नहीं होता है। संस्था से इस प्रकार के उत्तर का अभाव प्रेषण प्रक्रिया का अत्यंत गंभीर कुव्यवस्था का परिणाम है परंतु यह विद्यार्थी को काफी महँगा पड़ता है तथा किसी भी प्रकार का शुरुआती नकारात्मक अनुभव विद्यार्थी में संस्था के प्रति नकारात्मक प्रभाव छोड़ता है तथा इससे उनके अध्ययन योजना भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। इन नकारात्मक प्रभावों को आसानी से रोका जा सकता है यदि संस्था विद्यार्थी से अध्ययन सामग्री भेजते समय पर्याप्त ध्यान दें।

यदि सामग्री भेजने से सम्बन्धित कोई समस्या नहीं है विद्यार्थीगण अपने सत्रीय कार्य का उत्तर देने में समस्या का सामना कर सकता है विशेष रूप से सबसे पहले सत्रीय कार्य में। विद्यार्थियों को इस समय मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। उन्हें आवश्यक सहायता और मार्गदर्शन उनके अनुशिक्षक, परामर्शदाता अथवा मार्गदर्शक से प्राप्त कर सकते हैं ताकि वे एक-दूसरे से संपर्क करने की स्थिति में हो। विद्यार्थीगण को अध्ययन केन्द्र में संपर्क एवं परामर्श सत्र के दौरान उनके अनुशिक्षक और परामर्शदाता और

उनके सहपाठियों से मिलने के लिए विद्यार्थी का अवसर प्रदान करना संभव है। परंतु अध्ययन केन्द्र की स्थिति, यात्रा करने में तय की गई दूरी, समय, पैसा तथा अन्य अड़चनें विद्यार्थी को संपर्क सत्र में भाग लेने से रोक सकता है। यदि विद्यार्थी संपर्क कार्यक्रम में भाग लेता है तो अध्ययन केन्द्र में उपर्युक्त व्यवस्था के अभाव में तथा अनुशिक्षक-परामर्शदाता तथा अध्ययन केन्द्र के कर्मचारियों दोनों उपलब्ध सीमित समय के कारण विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान में सहायक नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में एक विशेष अनुशिक्षक-परामर्शदाता के पास सीमित संख्या में विद्यार्थी को जोड़ा जाए और वे आपस में पत्राचार, टेलीफोन या व्यक्तिगत रूप से संपर्क कर सकते हैं।

अन्य संभावित समस्याएँ जिनका सामना विद्यार्थीगण कर सकते हैं वे हैं परियोजना लिखते समय या अंतिम परीक्षा के दौरान तैयारी करते समय। वे समस्या का सामना तब भी कर सकते हैं जब उन्हें समय पर उनके सत्रीय कार्य का उत्तर या पृष्ठपोषण उचित टिप्पणी, ग्रेड और प्राप्तांक के साथ उन्हें प्राप्त नहीं होता है। इन मुद्दों पर दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को व्यावसायिक पद्धति अपनाने की आवश्यकता है तथा विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान हेतु व्यक्तिगत रूप से उन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। औपचारिक, अनम्य नीतियाँ और अभ्यास तथा नौकरशाही रवैया विद्यार्थी को हतोत्साहित करता है। संस्थानों का ग़ैर-जिम्मेदाराना व्यवहार सम्बन्धित संस्थानों की छवि को धूमिल करता है तथा शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता का गंभीर रूप से अवमूल्यन करता है। अत्यधिक संभावना यह है कि विद्यार्थी राजनीतिक रूप से दोषी संस्थान की आलोचना करे या अपने समस्याओं के निराकरण हेतु कोर्ट का सहारा लें। ऐसी स्थितियाँ कभी भी सुखद नहीं होगी।

विद्यार्थियों द्वारा सामना किए जाने वाले उपर्युक्त वर्णित सभी समस्याओं का उत्तर गुणवत्ता सुनिश्चित करना है। परंतु गुणवत्ता सुनिश्चित करना आसान नहीं होगा, जब तक दूरस्थ शिक्षा कार्य प्रणाली से सम्बन्धित सभी क्रियाकलापों का ध्यान रखने के लिए संस्थागत तंत्र की स्थापना नहीं की जाती है। दूरस्थ शिक्षा में ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे अधिक महत्वपूर्ण या कम महत्वपूर्ण के रूप में देखा जा सके। प्रत्येक गतिविधि का एक संस्थान के भीतर के शेष गतिविधियों पर अवश्य प्रभाव डालेगा।

उदाहरण के लिए, कार्यक्रम विकास में गुणवत्ता सुनिश्चयन का आशय होगा – उचित पाठ्यक्रम, उच्च स्तरीय और विद्यार्थी-सुगम अध्ययन सामग्री तथा सामग्रियों का समयोचित प्रेषण। यदि मान लिया जाए कि पाठ्यचर्या उपयुक्त है, क्योंकि इसमें उच्च स्तरीय प्रसिद्ध शिक्षाविदों का योगदान होता है, परंतु उच्च स्तरीय विद्यार्थी सुगम अध्ययन सामग्री के विकास से सम्बन्धित प्रश्न का उत्तर संतोषजनक रूप से केवल तभी दिया जा सकता है जब आपके पास इस कार्य को कार्यान्वित करने के लिए उच्च स्तरीय शैक्षणिक कर्मचारी हो। औपचारिक पदों पर शिक्षाविद जैसे व्याख्याता, रीडर और प्रोफेसर गुणवत्तापूर्ण सामग्री निर्माण का वादा नहीं करेंगे। यह अधिक महत्वपूर्ण नहीं है कि आप आंतरिक शिक्षाविदों या बाह्य पाठ्यक्रम लेखकों को संलग्न रखते हैं, जितना कि दूरस्थ अधिगम सामग्री निर्माण में उपयुक्त शिक्षाविदों की संलग्नता है क्योंकि इस कार्य हेतु उच्च स्तरीय योग्यता और लेखन कौशल की आवश्यकता होती है। सहयोगियों के मध्य प्रजातंत्र और समानता यहाँ पर कार्य नहीं करेगा। शैक्षणिक मुद्दों जैसे पाठ्यक्रम निर्माण में गुणवत्ता सुनिश्चित करना तभी संभव होगा जब आपके पास कुछ ऐसे शिक्षाविद हों जो अच्छी और बुरी सामग्री के मध्य अंतर स्पष्ट कर सकें तथा दिए गए पाठ्यक्रम या कार्यक्रम की कमजोरियों को सुधारने हेतु आवश्यक कदम उठा सकें। उदाहरण के लिए, यदि आपको विषयवस्तु, प्रस्तुतीकरण और भाषा के

दृष्टिकोण से किसी लेखक से अत्यंत ही खराब लिखित इकाई प्राप्त करते हैं तो आप सभी कमियों को दूर करने तथा इसमें सुधार करके स्वीकार योग्य बनाने की योग्यता आप में होनी चाहिए। यह गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता सुनिश्चयन का एक पक्ष है। यदि हम दूरस्थ विद्यार्थियों की कठिनाइयों को निम्नतम करना चाहते हैं तो दूरस्थ शिक्षण की प्रत्येक गतिविधि के लिए इसी प्रकार की पद्धति अपनाने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) दूरस्थ शिक्षा तंत्र में, आपके विचार से अधिगम प्रक्रिया में गंभीर रूप से अवरोध उत्पन्न करने वाले किन्हीं पाँच परिचालन समस्याओं की पहचान कीजिए। यदि आप से पूंछा जाए तो आप उन्हें कैसे हल करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.3 स्व-निर्देशित अधिगम

हम जानते हैं कि अधिगम विद्यार्थी की सूचना का अर्जन, प्रस्तुतीकरण, स्मरण, उत्तर और उपयोग करने की क्षमता को समावेशित करता है। यह इंगित करता है कि किस प्रकार हम वस्तु/सूचना को महसूस करते हैं, क्रिया, विचार और स्मरण करते हैं। इसलिए स्व-निर्देशित अधिगम भी इन सभी की ओर इंगित करता है तथा स्वयं के अधिगम पर चिंतन करने, समझ बनाने तथा नियंत्रण करने की योग्यता की आवश्यकता होती है (डर्ट, 1997)। स्व-अधिगम या स्व-निर्देशित अधिगम दूरस्थ अधिगम की एक महत्वपूर्ण शर्त है। आइए, स्व-निर्देशित अधिगम की अवधारणा को समझने का प्रयास करते हैं।

9.3.1 अवधारणा

स्व-अधिगम, जिसे स्व-निर्देशित अधिगम भी कहा जाता है, मुख्यतः विद्यार्थी की अपनी रूचि, आवश्यकता, योग्यता और गति के अनुसार सीखने की योग्यता पर बल देता है। नोल्स (1975, पृ. 18) के अनुसार, "स्व-निर्देशित अधिगम" एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति, किसी की सहायता या बिना सहायता प्राप्त किए, अपनी अधिगम आवश्यकताओं की पहचान, अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण, अधिगम के लिए मानव व सामग्री संसाधनों की पहचान,

उपर्युक्त अधिगम युक्ति का चयन एवं कार्यान्वयीकरण तथा अधिगम परिणाम का मूल्यांकन करने की पहल करता है। नोल्स (1975 एवं 1984) ने वयस्क अधिगम (Andragogy) को बाल अधिगम (पेडागॉगी) से अलग किया। उनका विचार है कि वयस्क विद्यार्थियों में उनकी आवश्यकता और क्षमता में क्रमिक रूप से वृद्धि होती है :

- अपने अध्ययन में स्व-निर्देशन करना;
- अधिगम में अपने जीवन अनुभव का उपयोग करना;
- सीखने के लिए अपनी स्वयं की तैयारी की पहचान करना; तथा
- वास्तविक अनुभव के साथ अपने अधिगम को व्यवस्थित करना।

अधिगम के इस एंड्रोजिक्ल मॉडल में शिक्षक एक सुगमकर्त्ता के रूप में विद्यार्थियों के अधिगम आवश्यकताओं की पहचान करने में सहायता करता है, अधिगम के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करता है तथा उपयुक्त तकनीकों और संसाधनों के साथ अधिगम अनुभव की एक शृंखला डिजाइन करता है (नोल्स, 1984)। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे लक्ष्य-केन्द्रित, गतिविधि-केन्द्रित और अधिगम-केन्द्रित हो। नोल्स स्व-अधिगम को निम्नलिखित के साथ न्यायसंगत ठहराते हैं :

- स्व-निर्देशित विद्यार्थी बेहतर विद्यार्थी होते हैं, वे अधिक चीजों को आसानी से सीखते हैं।
- वे अपने अधिगम की पूर्ण जिम्मेदारी लेने में सक्षम होते हैं। (इसलिए स्व-निर्देशित अधिगम उनके मनोवैज्ञानिक विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया से अधिक मेल खाता है)।
- वे उपयुक्त कौशल के विकास के लिए अवसर की तलाश में रहते हैं।
- त्वरित परिवर्तनशील ज्ञान की दुनिया में वे शिक्षा और अधिगम में परिवर्तन के पक्षधर होते हैं।

हम स्व-अधिगम को स्व-प्रबंधित अधिगम या स्व-निर्देशित अधिगम भी कहते हैं। इसलिए प्रायः तर्क दिया जाता है कि स्व-अधिगम में विद्यार्थी को उच्च स्तरीय दृढ़संकल्पबद्ध, स्वयं पहल करने की योग्यता, तथा स्व-अनुशासित होने की आवश्यकता है। वे न केवल अत्यधिक अभिप्रेरित होते हैं परंतु संपूर्ण अध्ययन के दौरान वे अपनी अभिप्रेरणा को कायम रखते हैं।

स्व-अधिगम, अधिगम के निश्चित विद्यार्थी-केन्द्रित विशेषताओं से युक्त होता है। यह विद्यार्थी के लिए अधिगम को सुगम बनाता हैः वे कब सीखना चाहते हैं (अपने स्वयं के समय के अनुसार, कितनी बार तथा उनकी सुविधा के अनुसार निर्धारित समय तक), वे कैसे सीखना चाहते हैं (उनके लिए उपयुक्त अधिगम विधि के अनुसार) तथा वे क्या सीखना चाहते हैं (अधिगम उद्देश्य और विषयवस्तु)।

विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के साथ शिक्षक के प्रत्यक्ष देखरेख में सीखने के आदी हैं वे स्व-अधिगम के माध्यम से ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति अर्जित करने में शुरु-शुरु में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं। इसे (स्व-अधिगम कौशल) प्राप्त करने के लिए उसे स्वयं को बाह्य सहयोग या बिना सहयोग अधिगम प्रक्रिया में प्रशिक्षित करना होगा। उसे अपने अधिगम गतिविधियों की योजना और नियंत्रण करने के लिए स्व-निर्भर होना होगा तथा अपने अधिगम के लिए स्थान और समय तथा अधिगम-समय का निर्धारण करना होगा। उसके अधिगम के अधिकांश भाग में अधिगम प्रक्रिया व्यक्तिगत और स्वशासी बन जाती है। इस प्रकार स्व-अधिगम सैद्धान्तिक रूप से स्वयं के द्वारा प्रारंभ और प्रबंधन किया जाता है।

सफल शैक्षणिक तंत्र के केन्द्र में व्यक्तिगत, विद्यार्थी-केन्द्रित अधिगम स्थित होता है। यह दूरस्थ शिक्षा तंत्र के साथ और अधिक सटीक होता है। विभिन्न मीडिया जैसे रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, फैक्स, कम्प्यूटर तथा सेटेलाइट तकनीक विद्यार्थी को शिक्षक और संस्था के साथ संपर्क बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुआ है। दूरस्थ अधिगम स्व-अधिगम को बढ़ावा देता है जो व्यक्तिगत संदर्भ में घटित होता है तथा बहुत हद तक स्वतंत्र अधिगम की माँग करता है।

यद्यपि, दूरस्थ शिक्षा को प्रायः विद्यार्थी का संस्थान से भौतिक रूप से अलगाव के कारण स्वतंत्र अधिगम समझा जाता है। परंतु शैक्षणिक दृष्टिकोण से ऐसा होना आवश्यक नहीं है (सीटन, 1993)। स्व-अधिगम भौतिक अलगाव तथा विद्यार्थी द्वारा अत्यधिक शैक्षणिक नियंत्रण दोनों के आयामों को समावेशित करता है। इस प्रकार के अधिगम के सार तत्व को विद्यार्थी को क्या, कब और कैसे अधिगम पर नियंत्रण के परिदृश्य में देखा जाना चाहिए। जितना अधिक विद्यार्थी का अधिगम पर नियंत्रण होगा उतना ही अधिक विद्यार्थी का स्वशासन होगा और इस प्रकार स्व-अधिगम होगा।

आपने ध्यान दिया होगा कि प्राथमिक स्तर पर अधिगम अधिक शिक्षक केन्द्रित होता है। परंतु जैसे-जैसे विद्यार्थी परिपक्व होता जाता है वह स्वतंत्र चिंतन का विकास करता है तथा इसका उपयोग वह ज्ञानार्जन के लिए करता है। स्व-अधिगम इस प्रकार अधिक वास्तविक और अर्थपूर्ण बन जाता है। शिक्षक और संस्थान से दूर रहने के कारण दूरस्थ विद्यार्थी स्व-अधिगम के विचार के अधिक नजदीक होते हैं, जोकि दूरस्थ शिक्षा की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। विद्यार्थियों के स्व-अधिगम को सुगम व सहज बनाने के लिए अधिगम सामग्री, उपकरण और तकनीकों को अधिगम की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु चयन किया जाता है। स्व-अधिगम स्वयं विद्यार्थी के ऊपर अधिक निर्भर करता है – सीखने की उनकी अभिप्रेरणा, स्व-अनुशासन के साथ स्वयं सीखने की उनकी दृढ़ता। दूरस्थ अधिगम विद्यार्थी के स्व-निर्भरता और स्व-निर्धारण का एक अच्छा परीक्षण है। दूरस्थ अधिगम विद्यार्थी में समझ उत्पन्न करता है कि अधिकांश ज्ञान, दृष्टिकोण तथा अन्तर्दृष्टि उनके स्वयं की क्रिया और उनके स्वयं की पहल से आती है। इस प्रकार विद्यार्थी यह अनुभव करता है कि सबसे उत्तम विद्यार्थी वास्तव में स्वयं वह ही होता है, तथा स्व-अधिगम की इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत प्रयास सबसे अधिक उत्पादक होता है।

हम जानते हैं कि सीखने के लिए कोई छोटा मार्ग नहीं होता है। सफलतापूर्वक स्वतंत्र अध्ययन करने के लिए उच्च स्तरीय एकाग्रता की आवश्यकता होती है। स्व-अधिगम कठिन और परिश्रमपूर्ण कार्य है। यह निम्नलिखित मुख्य पूर्व-आवश्यकताओं पर निर्भर करता है :

- सीखने के लिए इच्छा या प्रेरणा;
- स्पष्ट और वास्तविक लक्ष्य;
- पढ़ाई करने के लिए व्यवस्थित उपागम; तथा
- पर्याप्त शैक्षणिक सहयोग।

इस भाग में हमारी चर्चा में, हमने इस तथ्य पर ध्यानाकर्षण करने का प्रयास किया है कि स्व-अधिगम में सीखने की जिम्मेदारी शिक्षक से हटकर विद्यार्थी पर केन्द्रित होती है। यह विद्यार्थी को अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु उपर्युक्त अधिगम युक्तियों का चयन करने के लिए निर्णय लेने व जिम्मेदारी स्वीकार करने की स्वतंत्रता देता है।

इस प्रकार हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्व-अधिगम या स्व-निर्देशित अधिगम की अवधारणा, विशेष रूप से दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में, इनके द्वारा विशिष्ट बना है :

- शिक्षण-अधिगम में विद्यार्थी-केन्द्रित उपागम;
- विद्यार्थी की स्वयं के अधिगम के प्रति जिम्मेदारी;
- व्यक्तिगत जरूरतों, रूचियों और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षा का लचीला प्रावधान; तथा
- विशेष रूप से डिजाइन व तैयार की गई अधिगम सामग्री का उपयोग। (इकाई 7 देखें)

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) दूरस्थ शिक्षा में स्व-निर्देशित अधिगम की आवश्यक विशेषताएँ क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

9.3.2 चरण

उपरोक्त उपभाग 9.2.1 के अंतर्गत हमारी चर्चा के आधार पर, आपने ध्यान दिया होगा कि दूरस्थ विद्यार्थी एक समरूप इकाई नहीं है तथा अन्य बातों के अतिरिक्त उनकी अधिगम योग्यताओं और तरीके में भिन्नता होती है। इस प्रकार के विद्यार्थी समूह द्वारा स्व-निर्देशित अधिगम दूरस्थ विद्यार्थी और शिक्षक से कुछ निश्चित जिम्मेदारियों की माँग करता है। स्व-निर्देशित अधिगम (Self-directed learning - SDL) स्व-निर्देशित अधिगम की विशेषत चरण-शैली और प्रभावी अधिगम के लिए उपयुक्त शिक्षण शैली के ऊपर निर्भर करता है।

जेराल्ड ग्रो (1991) ने स्व-निर्देशित अधिगम के चार शैली तथा शिक्षक द्वारा संभावित गुप्त संकट के साथ चार शिक्षण शैली की पहचान की है तथा इसे चरणबद्ध स्व-निर्देशित अधिगम (Staged Self-Directed Learning - SSDL) मॉडल के रूप में प्रस्तुत करता है।

सारणी 9.1: चरणबद्ध स्व-निर्देशित अधिगम (SSDL) मॉडल

चरण	विद्यार्थी की अधिगम शैली	शिक्षक की शिक्षण शैली	उदाहरण	शिक्षकों की संभावित गलतियाँ
चरण 1	निर्भर	प्राधिकारी, कोच	त्वरित प्रतिपुष्टि, अभ्यास और सूचनात्मक व्याख्यान के साथ कोचिंग। कमियों और बाधाओं पर नियंत्रण करना।	अत्यधिक नियंत्रक हो सकता है जो विद्यार्थी की पहल को दमित कर सकता है तथा निर्भरता को बढ़ा सकता है।
चरण 2	रूचिपूर्ण	प्रेरक मार्गदर्शक	प्रेरणादायी व्याख्यान के साथ निर्देशित चर्चा। लक्ष्य निर्धारण और अधिगम रणनीतियाँ	शायद मनोरंजनात्मक अधिक हो परंतु विद्यार्थी के पास बहुत कम अधिगम कौशल और/या प्रेरणा हो।
चरण 3	संलग्न	सुगमकर्त्ता	शिक्षक द्वारा चर्चा को सहज सुगम बनाना। सेमिनार, समूह परियोजना।	शायद किसी से भी, कुछ स्वीकार करना और मूल्यांकन करना तथा विद्यार्थियों में आदरभाव की कमी आना।
चरण 4	स्व-निर्देशित	सलाहकार प्रत्यायोजक	इंटर्नशिप, निबंध, व्यक्तिगत कार्य, या स्व-निर्देशित अध्ययन समूह।	अत्यधिक पृथक्करण और इस प्रकार विद्यार्थियों से संपर्क में कमी आना तथा प्रगति की समीक्षा न करना।

स्रोतः ग्रो (1991) वेबसाइट www.essentialgptrainingbook.com/resources/.../Grw %20- %20SSDL%20model.doc 05-01-2017 से लिया गया।

जेराल्ड ग्रो (उपरोक्त) ने बल दिया किः

- स्व-निर्देशित योग्यता परिस्थितिजन्य है, एक विद्यार्थी एक विषय में स्व-निर्देशित हो तथा अन्य में निर्भर हो।
- एक निर्भर विद्यार्थी बनने में कोई बुराई नहीं है – उसे पढ़ाए जाने की आवश्यकता है।

इसलिए इस मॉडल का उद्देश्य निम्नलिखित हेतु आपकी सहायता करना है :

क) आपके वर्तमान विद्यार्थी स्व-निर्देशिता के संदर्भ में कहाँ पर हैं, के पहचान करने में।

ख) अपने शैक्षणिक गतिविधियों/सत्रों को उस स्तर के उपयुक्त बनाना; तत्पश्चात

ग) उनकी प्रगति को अगले उच्च स्तर तक ले जाने के लिए सुविधा प्रदान करना।

ये चार स्तर क्रमिक रूप से शिक्षक की जिम्मेदारियों को कम करते हैं या समाप्त करते हैं जब विद्यार्थीगण स्व-निर्देशित बनते जाते हैं। ग्रो (1991) बल देते हैं कि विद्यार्थी को अलग चरण में ले जाने के लिए समय चाहिए, यह अचानक ही नहीं होता। स्व-निर्देशित अधिगम का मूलभूत सिद्धान्त है कि शिक्षण परिस्थितिजन्य हैः शिक्षण शैली को विद्यार्थी की योग्यता और उस समय प्रेरणा स्तर से सामंजस्य बैठना आवश्यक है। (इसे "तैयार हैं" से इंगित करते हैं।)

ग्रो का विश्वास है कि अच्छा शिक्षण दो स्थिति उत्पन्न करता है : (क) यह विद्यार्थी के स्व-निर्देशन के स्तर से सामंजस्य स्थापित करता है, (ख) यह विद्यार्थी को अधिक स्व-निर्देशन की ओर प्रगतिशील बनाता है।

एक विद्यार्थी के स्व-निर्देशन के स्तर का निर्धारण किस प्रकार करें?

यदि आप विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से जानना चाहते हैं तो आप विद्यार्थियों के वैश्विक परिदृश्य को समझने का प्रयास कर सकते हैं। इस संदर्भ में आपके आंतरिक भाव को निर्धारित करने हेतु निम्नलिखित प्रश्न आपकी सहायता कर सकते हैं (http://www.longleaf.net/ggrow/SSDL/Disc.html#DefinitionDiscussion, cited in Grow, 1991 at www.essentialgptrainingbook.com/resources/.../Grow%20%20SSDL%20model.doc)।

1) विद्यार्थी का प्रेरणा स्तर क्या है?

2) विद्यार्थी किस प्रकार अर्थ निष्पादन करता है जब उसे एक सत्रीय कार्य को पूर्ण करने में पहल करने को कहा जाता है?

3) क्या विद्यार्थी कक्षा चर्चा में भाग लेता है?

4) विद्यार्थी को कितना विस्तृत निर्देशन देने की आवश्यकता है?

5) एक समूह परियोजना में विद्यार्थी का प्रदर्शन कैसा होता है?

6) विद्यार्थी अधिगम विधि के निर्धारण में अधिकारिक तौर पर आपके ऊपर कितना दबाव बनाना है? अथवा यह विद्यार्थी किस स्तर तक अपने अधिगम की जिम्मेदारी लेना चाहता है?

7) विद्यार्थी विषय से सम्बन्धित आवश्यक कौशल को आत्मसात करने के क्या स्वयं अभ्यास कर सकते हैं?

8) एक निर्भर विद्यार्थी की स्थिति में कौशल के अभाव में (जिसे वह सीख रहा है) किस हद तक निर्भरता बनी रहती है और किस हद तक यह अरूचि, निम्न आत्मविश्वास, निम्न प्रेरणा शक्ति तथा निरूत्साह से उत्पन्न होता है?

विद्यार्थी के स्तरों और आवश्यक शिक्षण विधि/प्रकार का वर्णन करने के पश्चात ग्रो (1991) शिक्षण-अधिगम संदर्भ के साथ सामंजस्य स्थापित करने तथा तुलना करने के लिए इन्हें एक सारणी रूप में प्रस्तुत करते हैं।

सारणी 9.2: सुमेलन सारणी

S4: स्व-निर्देशित विद्यार्थी	गंभीर बेमेल*1	बेमेल	लगभग सुमेल	सुमेल
S3: संलग्न विद्यार्थी	बेमेल	लगभग सुमेल	सुमेल	लगभग सुमेल
S2: अभिप्रेरित विद्यार्थी	लगभग सुमेल	सुमेल	लगभग सुमेल	बेमेल
S1: निर्भर विद्यार्थी	सुमेल	लगभग सुमेल	बेमेल	गंभीर बेमेल*2
	T1: विशेषज्ञ	T2: प्रेरक	T3: सुगमकर्त्ता	T4: प्रत्यायोजक

नोटः *1 = विद्यार्थी अधिकारवादी शिक्षक को विरोध करता है।

*2 = विद्यार्थी स्वतंत्रता का विरोध करता है जिसके लिए वह तैयार नहीं है।

स्रोतः www.essentialgptrainingbook.com/resources/.../Grow%20-%20SSDL%20model.doc.

यह सारणी विद्यार्थी को अगले चरण में ले जाने के लिए विद्यार्थी के स्व-निर्देशन के स्तर के अनुसार आपके शिक्षण शैली से सुमेल करने में सहायता करती है। उदाहरण के लिए एक S2 विद्यार्थी को T2 शिक्षक के साथ सटीक सुमेल के लिए जोड़े बनाना चाहिए। सारणी में आप देख सकते हैं कि किसी भी तरफ से, एक चरण ऊपर (T3) या एक चरण नीचे (T1) एक शिक्षक के साथ जोड़े बनाना लगभग सुमेल होगा। समस्या उत्पन्न होगी जब आप इससे बाहर जाएगें जहाँ पर आप महत्वपूर्ण कुमेल प्राप्त करना प्रारंभ कर देते हैं और इसलिए अधिगम अप्रभावी होगा।

उपरोक्त सारणी में आप ध्यान देंगे :

- समस्या उत्पन्न होती है जब निर्भर विद्यार्थी को अ-निर्देशक शिक्षक के साथ कुमेल किया जाता है तथा जब स्व-निर्देशित विद्यार्थी को उच्च स्तरीय शिक्षक के साथ कुमेल किया जाता है।
- **T1/T4 एक गंभीर बेमेल है :** कुछ S4 विद्यार्थी अच्छी तरह काम करने की अपनी योग्यता का विकास कर लेते हैं तथा अपने अधिगम पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं। यद्यपि अन्य S4 विद्यार्थी निरंकुश शिक्षक के प्रति रोष प्रकट करेंगे तथा निम्न स्तरीय माँगों के अवरोध के खिलाफ विद्रोह करेंगे। यह कुमेल विद्यार्थी को विद्रोही बनाने या अध्ययन से अरूचि उत्पन्न करने का कारण हो सकता है। S4 विद्यार्थी किसी के कहने पर घेरे से बाहर नहीं जाते हैं (यद्यपि, युवा विद्यार्थी से बिना प्रश्न पूछे इस प्रकार का व्यवहार अपेक्षित होता है जैसा कि ग्रामर विद्यालय और कुछ विश्वविद्यालय में होता है।)
- **T4/S1 भी एक गंभीर बेमेल है :** अतः शिक्षक विद्यार्थी को वह जिम्मेदारी सौंपे जिसे पूर्ण करने के लिए वह तैयार नहीं है तथा जो उसके आत्मविश्वास की कमी को मजबूत कर सकता है। विद्यार्थी शिक्षक के प्रति रोष प्रकट कर सकते हैं कि उन्हें ऐसी स्वतंत्रता के लिए बाध्य किया जा रहा है जिसके लिए वे तैयार नहीं है।
- शेष सभी स्थिति "लगभग सुमेल" तथा ''सुमेल'' है।

आपको इस तथ्य से अवगत होना आवश्यक है कि विभिन्न विशेषताओं वाले दूरस्थ विद्यार्थीगण उपरोक्त वर्णित सभी स्व-निर्देशित अधिगम तरीकों को निरूपित करते हैं तथा शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इन विद्यार्थियों के अधिगम योग्यताओं और तरीकों के साथ स्व-अधिगम (अनुदेशनात्मक) सामग्रियों तथा दूरस्थ शिक्षण विधियाँ और तकनीक आवश्यक रूप से सुमेल करना चाहिए।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4) स्व-निर्देशित अधिगम के विभिन्न विशेषता चरण शैली का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.3.3 लाभ और हानियाँ

स्व-निर्देशित अधिगम के निम्नलिखित **लाभ** हैं:

- यहाँ शिक्षक के नेतृत्व में रहते विद्यार्थी के स्वाभाविक जिज्ञासा को शांत करने का अवसर प्राप्त होता है।
- परंपरागत शिक्षक-निर्देशित अधिगम की अपेक्षा अधिक व्यापक रूचियों को अपनाने हेतु यह विविध अवसर उपलब्ध कराता है।
- यह तुलनात्मक रूप से तनावमुक्त अधिगम उपागम है जो परिवार के भीतर व बाहर सहयोग की भावना को पुनर्बलन प्रदान करता है।
- यह आत्मविश्वास, पहल, परिश्रम ओर संतोषप्रद जीवन के स्वाभाविक विकास को बढ़ावा देता है।
- विद्यार्थी स्व-निर्भर, स्वाध्यायी, स्वतंत्र, स्व-अनुशासन तथा लक्ष्य साधित बन जाता है।
- यह चयन की शक्ति और क्या, कब तथा किस प्रकार सीखें का निर्णय लेने की स्वतंत्रता के माध्यम से एक सामर्थ्यवान का अनुभव प्रदान करता है।
- यह विद्यार्थी के ध्यान केन्द्रण के स्तर को बढ़ाता है, क्योंकि अधिगम प्रक्रिया को विद्यार्थी स्वयं नियंत्रित करता है।
- यह अधिगम के प्रति रूचि जागृत करता है तथा विद्यार्थी की संस्कृति, विश्व दृष्टिकोण और परिदृश्य के माध्यम से सीखने का अवसर उपलब्ध कराता है।
- यह उच्च कोटि का चिंतन, समस्या समाधान, सहयोगात्मक कौशल के विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराता है।
- यह वास्तविक अधिगम के प्रगति का निरीक्षण और स्व-आँकलन पर ध्यान केन्द्रित करता है न कि अन्य के द्वारा उसके अधिगम का आँकलन करने पर।

हानियाँ

- विद्यार्थी अपने शैक्षणिक स्तर और योग्यता के अनुसार अधिगम आवश्यकताओं की पहचान करने में असफल हो सकता है।
- विद्यार्थी अधिगम के लिए उपर्युक्त संसाधन ढूँढ़ने में या प्राप्त करने में असमर्थ हो सकता है।
- सहपाठी प्रतिपुष्टि के लिए विद्यार्थी को बहुत कम अवसर होता है।
- विद्यार्थी अपनी प्रगति का आँकलन करने में कठिनाई महसूस कर सकता है।
- एक ही त्रुटि की पुनरावृत्ति या बार-बार गलती करने की संभावना बनी रहती है।
- यह विद्यार्थियों को स्वयं के लिए नियम और नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।
- यह विद्यार्थियों पर अपने अधिगम तथा निरीक्षण के लिए अधिक जिम्मेदारियाँ सौंपने पर जोर देता है।

9.3.4 स्व-निर्देशित अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

इस भाग में हम उन कारकों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो स्व-निर्देशित अधिगम को प्रभावित करता है।

i) अधिगम सामग्री

स्व-निर्देशित अधिगम या स्व-अधिगम प्रभावकारी अधिगम सामग्रियों के प्रावधान पर निर्भर करता है जिसे विशेष रूप से विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से सीखने योग्य बनाने के लिए डिजाइन किया जाता है। अधिगम सामग्रियों की गुणवत्ता स्वतंत्र अधिगम पर गहरी छाप छोड़ता है। अधिगम सामग्री को उचित रूप से डिजाइन, विकसित और प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों के लिए सीखना आसान हो सके तथा विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करता हो। कई दूरस्थ शिक्षाविदों स्वतंत्र अधिगम के लिए स्पष्ट उद्देश्य, निर्देश, वास्तविक अपेक्षाओं तथा सामग्रियों के स्व-निहित प्रकृति के महत्व पर बल दिया है। अधिगम सामग्रियों की सुस्पष्टता के अभाव में कार्यक्रम से विद्यार्थियों का विमुखीकरण, हताशा, निरूत्साह की ओर ले जा सकता है, विशेष रूप से यदि बाह्य अधिगम सहायता पर्याप्त रूप से उपलब्ध न हो।

नवीन शिक्षण उपागम और विशेष रूप से डिजाइन की गई अधिगम सामग्रियाँ स्व या स्वतंत्र अधिगम को सुगम बनाता है। डार्ट (1997) ने निम्नलिखित कारकों, जो पाठ्यक्रम डिजाइन से सम्बन्धित है, को महत्वपूर्ण पाया। ये कारक स्व-अधिगम को बेहतर ढंग से समझने के लिए उपयोगी हैं।

- पाठ्यक्रम डिजाइन विद्यार्थी को अपने स्वयं के अधिगम के बारे में, अर्थ खोजने बोध तथा वस्तुओं को अलग-अलग तरीके से देखने के महत्व पर बल देते हुए, ज्ञान के विकास में सहायता करता है। इसे गतिविधियों जिसमें विभिन्न सूचना स्रोतों तक पहुँचने की आवश्यकता होती है, के माध्यम से प्रभावी बनाया जा सकता है।
- पाठ्यक्रम डिजाइन विद्यार्थी को अपने स्वयं के अधिगम के बारे में जागरूक गतिविधियों के माध्यम से बनाया जा सकता है जिसमें विश्लेषण, उपयोग, आँकलन और चिंतन की आवश्यकता होती है।
- पाठ्यक्रम डिजाइन विद्यार्थियों को अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से उनके अधिगम में स्व-निर्देशन को अनुभूत करने के अवसर उपलब्ध कराने वाला होना चाहिए।
- विद्यार्थियों को विश्वस्त करना चाहिए कि जिन सामग्रियों से वे सीख रहे हैं वे उपयोगी, रूचिकर और चुनौतीपूर्ण हैं।
- विद्यार्थियों को वांछनीय अधिगम व्यवहार (प्रक्रियाएँ) तथा परिणाम (उत्पाद वस्तु) के मॉडल से अवगत कराना चाहिए।

इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षण उपागम और सामग्रियों की प्रकृति, प्रकार और गुणवत्ता स्व-अधिगम पर अपना छाप छोड़ेगा।

ii) शैक्षणिक पृष्ठभूमि

शैक्षणिक पृष्ठभूमि और कार्य अनुभव, पूर्व अध्ययन में प्राप्त ग्रेड/प्राप्तांक तथा शैक्षणिक योग्यता महत्वपूर्ण चर हैं जो स्व-अधिगम की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। विद्यार्थियों के पूर्व अधिगम अनुभव स्वतंत्र अधिगम की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है। विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक योग्यता और स्वतंत्र विद्यार्थी होने की योग्यता की अनुभूति उनके अध्ययन के प्रयासों के सफलता या अन्यथा का उच्च स्तरीय भावी सूचक प्रतीत होती है। खंड 1 की इकाई 4 और 5 में आपने ध्यान दिया होगा कि कुछ मुक्त अधिगम संस्थानों ने विद्यार्थियों को अध्ययन कार्यक्रम के शैक्षणिक माँगों से निपटने के लिए पूर्व निर्धारित योग्यता के निम्नतम स्तर को प्राप्त करने में उनकी सहायता हेतु सेतु (ब्रिज) पाठ्यक्रम विकसित किया है।

iii) परिवेशीय कारक

अधिगम, मानव व्यवहार से सम्बन्धित कुछ भी, मानव का उसके परिवेश के संदर्भ में एक कार्य है। अधिगम जिस परिवेश में कार्यान्वित होता है उसकी भूमिका और महत्व को अधिक बल नहीं दिया जाना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें विद्यार्थी के स्वशासन पर तथा परिवेशीय परिदृश्य के अनुसार स्वशासन का उपयोग करने की योग्यता पर ध्यान देना चाहिए।

iv) परिचालन और व्यवस्थावयक सहयोग

दूरस्थ विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा और रूचि को विकसित करने और बनाए रखने का एक सबसे महत्वूपर्ण पहलू प्रभावशीलता है जिसके साथ एक संस्था अपने परिचालन एवं रसद को संभालता है। समर्थन समय पर प्रवेश, सामग्रियों को भेजने का स्पष्ट कार्यक्रम, सत्रीय कार्यों को प्रस्तुत करने, परामर्श-अनुशिक्षण का स्पष्ट कार्यक्रम रूपरेखा तथा प्रभावकारी ढंग से कार्यक्रमों का क्रियान्वयनीकरण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना जागृत करता है तथा पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करता है चाहे पाठ्यक्रम कठिन भी हो। इसके विपरीत, एक कमजोर प्रशासन कुव्यवस्था फैलाता है जो विद्यार्थियों को निरूत्साहित करता है यद्यपि पाठ्यक्रम अच्छा और शैक्षणिक रूप से उपयोगी हो सकता है। उदाहरण के लिए, यदि अध्ययन सामग्रियाँ विद्यार्थी तक समय पर नहीं पहुँचती हैं तो वह निर्धारित समय पर अपना सत्रीय कार्य पूरा करके उसे प्रस्तुत करने से गंभीर कठिनाइयों का सामना करेंगे तथा वे परामर्श सत्र के लिए अपने आपको तैयार नहीं कर पाएँगे और इस कारण से तथा अन्य सम्बन्धित कठिनाइयों के कारण वे परीक्षा में शायद न बैठें या यदि वे परीक्षा में बैठते हैं तो अंतिम परीक्षा में उनका प्रदर्शन प्रभावित होगा।

v) अधिगम सहयोग

समय पर शिक्षक का सहयोग अधिगम को सुगम बनाता है। बाथ (1979) के अनुसार दूरस्थ माध्यम से अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य निर्धारण, उपयुक्त अधिगम सामग्रियों के चयन में, उनके अधिगम गतिविधियों को पूरा करने तथा उनकी प्रगति का मूल्यांकन करने में सहायता की आवश्यकता होती है। सीवार्ट (1978) ने विद्यार्थियों के संपूर्ण अध्ययन के दौरान सतत परामर्श और सहयोग की आवश्यकता को पहचाना। स्व-अधिगम को सुगम बनाने में मानवीय तत्व का प्रक्षेपण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक शिक्षक (या एक शैक्षणिक परामर्शदाता) तक आसानी से पहुँचने का अवसर जो उनके अध्ययन के दौरान उत्पन्न हुए प्रश्नों का उत्तर दे सकें तथा उन्हें पढ़ने के लिए उनका उत्साहवर्धन कर सकें, पर्याप्त और संतोषजनक होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, शिक्षार्थियों को अपनी पढ़ाई के साथ सामना करने के लिए सक्षम करने के लिए, उनके स्वतंत्र अध्ययन को पूरा करने के सभी चरणों में पृथक दूरस्थ शिक्षकों को उचित अधिगम वातावरण उपलब्ध कराने के लिए सभी स्तरों पर विभिन्न प्रकार की संस्थागत सहायता पूर्ण रूप से आवश्यक है। इसलिए दूरस्थ विद्यार्थियों के लिए प्रभावशाली सहयोगी सेवाएँ होनी चाहिए जो उन्हें उचित वातावरण उपलब्ध करा कर जिसके अंतर्गत वे श्रेष्ठ तरीके से सीख सकें, सशक्त बनाए।

9.3.5 स्व-अधिगम के प्रोत्साहन की युक्तियाँ

जार्विस, होलफोर्ड और ग्रिफिन (1998) ने विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा किए गए अनुसंधान का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि स्व-अधिगम अथवा स्व-निर्देशित अधिगम को बढ़ावा देने के लिए कुछ उपायों की आवश्यकता है। कुछ महत्वपूर्ण उपाय निम्नलिखित हैं :

- अलग-अलग सूचना स्रोतों के माध्यम से निश्चित विषयवस्तु पर सूचना उपलब्ध कराना।
- एक व्यक्ति या विद्यार्थियों के एक छोटे समूह के लिए अधिगम विषयवस्तु के एक निश्चित भाग पर संसाधन के रूप में सेवा करना।
- विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं और क्षमताओं का आँकलन करने में उनकी सहायता करना ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अपना अधिगम पथ का निर्धारण कर सकें।
- उनके अधिगम पथ पर पृष्ठपोषण उपलब्ध कराना।
- आवश्यकता आँकलन के माध्यम से चिह्नित विषयवस्तु पर नई सूचना प्राप्त करना या उपलब्ध संसाधन को ढूँढ़ना।
- विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों या विषयवस्तु से सम्बन्धित सूचना, मीडिया और मॉडल संसाधन निर्मित करना।
- विद्यार्थियों के साथ औपचारिक और समूह के बाहर एक सुगमकर्त्ता के रूप में कार्य करना।
- विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति एक ऐसी दृष्टिकोण और उपागम के विकास में सहायता करना जो स्वतंत्रता को पोषित करें।
- अधिगम अनुभव में रूचि उत्पन्न करने के लिए छोटे सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ावा देना, प्रश्न पूछने के लिए उत्साहवर्धन करना तथा चर्चा का आयोजन करना।
- अधिगम और स्व-निर्देशित जिज्ञासा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास में सहायता करना।
- एक अधिगम प्रक्रिया का प्रबंध करना जिसमें ऐसी गतिविधियों का समावेश हो जो आवश्यकताओं की सतत पहचान करें, लगातार पृष्ठपोषण प्राप्त करें तथा विद्यार्थियों की भागीदारी को बढ़ावा दे।
- एक अधिगम अनुभव के दौरान और अंत में विद्यार्थी उपलब्धि का एक मूल्यांकनकर्त्ता के रूप में कार्य करना।

यदि उपरोक्त वर्णित उपायों की अवहेलना की जाती है तो स्व-निर्देशित अधिगम प्रभावित होगा।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में स्व-अधिगम को बढ़ावा देने वाले कारकों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 स्व-अधिगम के लिए आवश्यक कौशल

विद्यार्थियों को सुझाव दिया जाना चाहिए कि वे स्वयं किस प्रकार अध्ययन करें। स्व-अधिगम के लिए पर्याप्त कौशल विद्यार्थी को शैक्षणिक गतिविधियों जैसे श्रवण, देखना, बोलना, पढ़ना और लिखना, से सबसे अधिक संभावित लाभ प्राप्त करने में सहायता करता है। उन्हें अपने अध्ययन को सतत् रूप से जारी रखने और स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों को आवश्यक युक्तियाँ अपनाने की आवश्यकता है।

इस भाग में हम, संक्षिप्त रूप से, स्व-अधिगम के लिए एक विद्यार्थी के आवश्यक अध्ययन कौशल, पठन कौशल और लेखन कौशल के बारे में चर्चा करेंगे। इस भाग में वर्णित सामग्रियाँ पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन डिस्टेंस एज्युकेशन (पीजीडीडीई) की पाठ्यक्रम सामग्रियों तथा "पुस्तिकाः इग्नू में अध्ययन कैसे करें" से लिया गया है।

9.4.1 अध्ययन कौशल

अध्ययन कौशल विद्यार्थी को अधिगम सामग्रियों से उच्चतम लाभ प्राप्त करने में सहायता करता है। ये कौशल विद्यार्थियों से तत्परता तथा सक्रिय मानसिक अभ्यास की माँग करता है। इस प्रकार विद्यार्थी को अपने पढ़े हुए सूचना को प्रभावकारी ढंग से संभालने और प्रसंस्कृत करने के अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग करना है। ये कौशल विद्यार्थी की पढ़ाई में कम समय व्यतीत करने तथा अधिक सीखने में सहायता करता है।

स्व-अधिगम के दो आयाम हैंः प्रथम, अधिगम सामग्री विद्यार्थी को अधिक प्रभावकारी ढंग से कार्य करने में सहायक होना चाहिए। अतः अधिगम सामग्रियों का निर्माण इस ढंग से किया जाता है कि विद्यार्थी को अधिकतम अधिगम अनुभव प्राप्त हो सके। द्वितीय, विद्यार्थी को पर्याप्त अध्ययन कौशल का विकास करना चाहिए ताकि वह अधिगम सामग्रियों से – चाहे वह लिखित या अलिखित मीडिया हो – अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें।

पर्याप्त अध्ययन कौशल वाले विद्यार्थीगण अपने अधिगम के विभिन्न आयामों के बारे में महत्वपूर्ण निर्णय ले सकें। इन आयामों में सम्मिलित हैंः

- किस प्रकार अध्ययन करें – चयनित अधिगम का माध्यम और विधि
- कहाँ पर अध्ययन करें – अधिगम सामग्रियों को पढ़ने के लिए सुविधाजनक स्थान
- कब अध्ययन करें – प्रारंभ/समाप्त तिथि तथा अधिगम गति।

उच्च स्तर पर अधिगम विविध बुनियादी अधिगम कौशलों के ऊपर निर्भर करता है। विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से अध्ययन करने के लिए विविध उपागमों को अपनाता है। वास्तविक रूप में कोई एक कौशल समुच्चय नहीं है जो प्रभावकारी अध्ययन बनता है। जैसा कि कोई एक शिक्षण या अधिगम तरीका नहीं है अतः स्वतंत्र रूप से सीखने का एक बना-बनाया सूत्र भी नहीं है। तथापि, एक स्वशासित विद्यार्थी बनने के लिए आपको ज्ञान अर्जन के लिए अपने कौशलों में पठन स्वयं का अध्ययन तरीके का विकास, प्रासंगिक प्रश्न पूछकर (स्वयं और अन्य को), सक्रिय रूप से समूह चर्चा में भाग लेकर, टिप्पणी बनाकर इत्यादि के माध्यम से सुधार करना होगा। इस प्रकार स्वनिर्भर विद्यार्थी को अपने अध्ययन से निपटने के लिए नए अधिगम व्यवहार अपनाना होगा।

अध्ययन कौशलों का एक विस्तृत भंडार बनाना कठिन है। स्व-अधिगम की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए हम यहाँ पर स्व-निर्भर विद्यार्थी में प्रभावी अध्ययन कौशलों के विकास से सम्बन्धित तीन महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करते हैं :

- कब अध्ययन किया जाए?
- अध्ययन कहाँ किया जाए?
- कितना अध्ययन किया जाए?

आइए, प्रत्येक मुद्दे पर इसी क्रम में जैसा कि उपर्युक्त लिखित है, चर्चा करते हैं।

i) **कब अध्ययन किया जाए?** पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की प्रभावकारी और प्रभावशील प्राप्ति हेतु विद्यार्थी को निर्धारित करना होगा कि उसका अध्ययन समय कब से कब तक होगा। अन्य कार्यों और जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए शेष समय का उपयोग अपने अध्ययन समय के लिए किस प्रकार करता है। इसकी योजना बनानी चाहिए। विद्यार्थी को यह ज्ञात होना चाहिए कि वह अपने अध्ययन को व्यवस्थित रूप से किस प्रकार कार्यान्वित करें। विद्यार्थी को यह अवगत कराना चाहिए कि वह अपने अध्ययन को किस प्रकार नियमित बनाने से वे अपने ज्ञान अर्जन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित बना सकते हैं।

   कुछ वयस्क विद्यार्थी अध्ययन समय का निर्धारण करने में समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अध्ययन करने के अतिरिक्त उनके पास सामाजिक, व्यावसायिक और अन्य पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना होता है। इन जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए उन्हें अपने अध्ययन का निर्धारण इस प्रकार करना चाहिए कि वे सतत् रूप से अध्ययन कर सकें तथा अपने दैनिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन कर सकें। हमारा कहने का तात्पर्य यह है कि अध्ययन नियमित रूप से करना चाहिए तथा परीक्षा के समय पाठ्यक्रम समाप्ति की आवश्यकता न पड़े।

ii) **कहाँ अध्ययन किया जाए?** आप शायद हमसे सहमत होंगे कि एक अभिप्रेरित, स्व-निर्देशित विद्यार्थी कहीं पर भी पढ़ने के योग्य होना चाहिए जैसे एक पुस्तकालय के शांत वातावरण में, एक भीड़ भरी हुई बस/रेलगाड़ी में या एक पार्क में। परंतु हमें यथार्थवादी होना होगा। हममें से अधिकांश अपने मन को व्यवधानों से अलग नहीं कर सकते हैं। यह व्यवधान परिवेशीय या मानसिक हो सकता है। अध्ययन स्थल ऐसे होने चाहिए जो इस प्रकार के व्यवधानों से दूर होना चाहिए तथा जो आपके ध्यान को भंग कर दे। अध्ययन स्थल उचित रूप से प्रकाशित व हवादार होने चाहिए। हमें यहाँ ध्यान देना है कि प्रत्येक विद्यार्थी मनचाहा स्थिति प्राप्त नहीं कर सकता है। तथापि पढ़ने के स्थान में उचित अधिगम वातावरण का निर्माण करने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

iii) **कितना अध्ययन किया जाए?** तीसरा चरण है कि अध्ययन में कितना समय व्यतीत करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि अध्ययन में व्यतीत किए जाने वाले समय विषय तथा पूर्व से ही हमारे ज्ञान और वांछित ज्ञान अर्जन पर निर्भर करता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप मंद गति से सीखते हैं या नहीं। अतः एक विषय विशेष पर व्यतीत किए जाने वाले समय का निर्धारण करने का एक विशिष्ट सूत्र नहीं होता है। यह अलग-अलग विद्यार्थियों के लिए अलग-अलग हो सकता है। हम जितना अधिक अपने कार्य संपादन के लिए योजना बनाते हैं हमें उतना ही अधिक समय गहन चिंतन और परावर्तन के लिए मिलेगा।

इसके अतिरिक्त और अन्य उपाय है जिनके माध्यम से हम अधिगम सामग्रियों से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं। उनमें से कुछ पर चर्चा हम यहाँ करेंगे।

क) विषयवस्तु का ज्ञान : विद्यार्थी को अधिगम सामग्री के विभिन्न भागों से परिचित होना चाहिए। अधिगम सामग्री के भागों से परिचित कराने में उनकी सहायता करने से उनके समय और प्रयास में बचत हो सकती है। लिखित अधिगम सामग्रियों के अध्ययन के दौरान निम्नलिखित बातों पर हमें ध्यान देना चाहिए:

- ***विषयवस्तु का सर्वेक्षण :*** लिखित सामग्री पर एक सरसरी निगाह डालने से पता चल जाता है कि शिक्षक ने विषयवस्तु को किस प्रकार प्रस्तुत किया है। उन्होंने शीर्षक को बड़े (bold) अक्षरों में प्रस्तुत किया है या नहीं, क्या मार्जिन पर भी कोई शीर्षक है; क्या आलेख, चार्ट इत्यादि हैं?

- ***प्रस्तावना/परिचय/प्राक्कथन को पढ़ना :*** इनमें अध्ययन सामग्री के बारे में शिक्षक की व्याख्या का समावेश होता है लेखक को लिखने का उनका उद्देश्य/योजना तथा लेख के व्यवस्थापन पर उनका विवरण होता है। प्रस्तावना में लेख अन्य से किस प्रकार से भिन्न है या यह ज्ञान के क्षेत्र में किस प्रकार आगे योगदान देता है के बारे में विवरण होता है।

- ***विषयवस्तु को पढ़ना :*** विषयवस्तु की सूची हमें विस्तृत रूप से यह बताती है कि लेख में क्या सम्मिलित किया गया है। यह हमें जो पाठ पढ़ना चाहते हैं उसे ढूँढ़ने में सहायता करता है।

- ***विषय अनुक्रमणिका को देखना :*** अनुक्रमणिका यह पहचान करने में सहायता करता है कि हमारी जो आवश्यकता है वह इसमें सम्मिलित की गई है या नहीं। यह एक महत्वपूर्ण सहायक है क्योंकि यह हमें हमारी आवश्यकता के अनुरूप सूचना ढूँढ़ने में सहायता करती है।

- ***शब्दावली की जाँच :*** विशिष्ट शब्दों की एक शब्दावली हमारी सहायता करती है क्योंकि यह लेख में उपयोग किए गए विशिष्ट शब्दों, मुहावरों का अर्थ उपलब्ध कराता है।

ख) अमौखिक सामग्री की व्याख्या : अमौखिक सामग्रियों से हमारा तात्पर्य है, मानचित्र, चार्ट, सारणी, आलेख इत्यादि जो हमें अमूर्त और कठिन अवधारणाओं को समझने में हमारी सहायता करता है। हममें से कुछ इन सामग्रियों का उपयोग अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए करते हैं। यदि हमें विभिन्न प्रकार के चित्रांकित सामग्रियों के साथ कार्य करने का अवसर दिया जाता है तो निश्चित रूप से हम जो पढ़ रहे हैं उसे बेहतर ढंग से समझने की स्थिति में होंगे। हमें, इसलिए अमौखिक सामग्रियों से सीखने के कौशल का अर्जन करना चाहिए।

हमें चित्रांकित सामग्रियों की व्याख्या करने के कौशल का अर्जन करने की आवश्यकता है। मानचित्र, चार्ट, आलेख सामान्यतः ऐसी सामग्रियाँ हैं जिनका उपयोग हम हमारी अधिगम सामग्रियों में करते हैं। आइए, कुछ अमौखिक सामग्रियों के बारे में चर्चा करते हैं:

- ***मानचित्र :*** कई प्रकार के मानचित्र होते हैं तथा प्रत्येक मानचित्र एक विशेष सूचना को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक मानचित्र का एक विशेष बिन्दु होता है जिसकी व्याख्या करके प्रासंगिक सूचना प्राप्त की जा सकती है। उदाहरण के लिए, राजनीतिक मानचित्र रंग संयोजन का उपयोग करता है तथा निश्चित सीमा रेखा का उपयोग राजनीतिक विभाजन, प्रशासनिक विभाजन को प्रदर्शित

करने के लिए किया जाता है। सामान्यतः मानचित्र, विभिन्न रंगों, रेखाओं, पैमाने आदि क्या प्रदर्शित करते हैं इसके लिए विशिष्ट दिशा निर्देश प्रस्तुत करता है।

- ***आलेख और चार्ट :*** इनका उपयोग आँकड़ों को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है। हममें से सभी ने कभी न कभी कुछ सूचना को प्रदर्शित करने के लिए चार्ट का उपयोग किया है। चार्ट के माध्यम से आँकड़ों/सूचनाओं को प्रदर्शित करने के कई तरीके हैं तथा सभी के बारे में अर्थात् आलेख, चार्ट तथा सूचनाओं के प्रकार की चर्चा करना यहाँ पर प्रासंगिक नहीं हैं। हमारा उद्देश्य यह बताना है कि स्व-अधिगम में आलेख और चार्ट का उपयोग होता है।

  यहाँ पर हम चर्चा करना चाहेंगे कि आलेख चार्ट के मुकाबले में सीमित सूचना उपलब्ध कराता है। आलेख प्रायः अधिक संरचित और कुछ विशेष सूचना उपलब्ध कराता है जबकि चार्ट एक ही समय में एक साथ कई सूचनाएँ प्रदर्शित कर सकता है।

ग) **अवधारणा मान चित्र :** जब हम अध्ययन करते हैं तो हम जो अवधारणा (विषयवस्तु) पढ़ रहे होते हैं उसका एक आलेखीय चित्रण बनाते हैं। यह आलेख हम जो पढ़ेंगे उसकी अवधारणा चित्रण को प्रदर्शित करता है। अवधारणा मान चित्र एक अधिगम युक्ति है जिसके माध्यम से विद्यार्थी एक विषय की महत्वपूर्ण अवधारणाओं की पहचान करता है तथा विद्यार्थी महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अवधारणा की समझ बनाता है। सभी अवधारणाएँ एक-दूसरे से अंतःसम्बन्धित होती हैं। एक अच्छा अवधारणा मान चित्र तैयार करने के लिए हमारे पास समालोचनात्मक चिंतन का कौशल होना चाहिए क्योंकि हमें जिन सूचनाओं के बारे में अध्ययन किया है उसे श्रेष्ठ ढंग से प्रदर्शित करने के लिए किस प्रारूप में किन शब्दों में और मुहावरों में करना है तथा जब हमें सूचना की आवश्यकता होगी तो किस तरह से सूचना का स्मरण करेंगे।

यहाँ एक तकनीक है जिसका हम उपयोग कर सकते हैं :

- अध्ययन के लिए सूचना की मात्रा का चयन एवं निर्धारण करना;
- अध्ययन के लिए चयनित संपूर्ण सामग्री का पठन/पाठन करना;
- जो कुछ पढ़ा जा रहा है उसके मुख्य बिन्दु या सार तत्व की पहचान करना;
- प्रत्येक अनुच्छेद में मुख्य बिन्दु की पहचान करने के लिए अनुच्छेद को पुनः पढ़ना;
- पढ़े गए अनुच्छेद के शीर्षक और केन्द्रबिन्दु को आसानी से प्राप्त किए जाने वाले प्रारूप में लिखना।

अवधारणा मान चित्र तैयार करने का कोई एक तरीका नहीं होता है। एक अवधारणा मान चित्र एक विद्यार्थी के लिए सहज हो सकता है परंतु वहाँ दूसरे विद्यार्थी के ठीक से शायद कार्य न करे। यह पता लगाया जा सकता है कि अवधारणा मान चित्र सही है या नहीं जब विद्यार्थी इसका उपयोग अध्ययन उद्देश्य के लिए करता है तथा यह ज्ञात करता है कि उसे सीखने में महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त करने में यह सहायक है या नहीं।

इससे सम्बन्धित अवधारणा है रूपरेखा, टिप्पणी तैयार करना तथा संक्षिप्तीकरण। इन अवधारणाओं के बारे में इस इकाई के भाग 9.4.3 में चर्चा करेंगे।

9.4.2 पठन कौशल

अलग-अलग व्यक्ति पठन शब्द का उपयोग अलग-अलग ढंग से करते हैं। चूँकि इस शब्द का अर्थ मुख्यतः जिस संदर्भ में घटित हो रहा है उसके ऊपर निर्भर करता है, इसलिए हमें पठन के लिए केवल एक परिभाषा की आशा नहीं करनी चाहिए।

पठन का सामान्य रूप में अर्थ है लिखित या छपे हुए शब्दों की समझ बनाना। विद्यार्थी प्रतीक का उपयोग करते हुए अपनी स्मृति से सूचना सक्रिय करता है तथा इस सूचना का उपयोग लिखित संदेश की व्याख्या करता है। एक व्यापक परिभाषा जिसका उपयोग विस्तृत रूप से किया जाता है तथा स्वीकारा जाता है कि पठन एक प्रक्रिया है जहाँ एक विद्यार्थी छपे हुए लेख से अर्थ प्राप्त करता है या निष्कर्ष निकालता है (पठन कौशल छपे हुए/दृश्य माध्यम से सम्बन्धित हैं)। इसका अर्थ हुआ कि विद्यार्थी अपनी पृष्ठभूमि पूर्व अनुभव तथा अपने भावों के अनुसार अधिगम लेख से अर्थ निकालता है। यदि हम किसी से वार्तालाप कर रहे हैं तो हमें उसे रोककर, जब हमें आवश्यकता महसूस हो, व्याख्या करने के लिए कह सकते हैं। इसी प्रकार, जब हमें पठन/पाठन में कठिनाई महसूस करते हैं तब हम लेख के सम्बन्ध में पूछताछ करने की आवश्यकता होती है। चूँकि दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में विचार विमर्श हेतु शायद ही शिक्षक उपलब्ध हो, लेख ही हमारा एकमात्र सहारा होता है, तथा पठन को अधिगम सामग्रियों के साथ अन्तःक्रिया या पूछताछ के रूप में वर्णन कर सकते हैं।

पठन दो प्रकार के हो सकते हैं : गहरी और सतही। कुछ विद्यार्थी बाह्य आरोपित आँकलन माँग के अनुरूप सूचना को पुनः उद्धृत करने का प्रयास करते हैं, जबकि कुछ अन्य विद्यार्थी यह समझने का प्रयास करते हैं कि लेखक इस इकाई के माध्यम से हमें क्या संदेश देना चाहते हैं।

क) पठन के चरण : बारेट (1972) के पठन बोध के वर्गीकरण को एक मॉडल के रूप में रखते हुए यहाँ पर हम छः चरण प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्हें एक विद्यार्थी व्यवस्थित ढंग से पठन प्रक्रिया के दौरान गुजरता है जब वह निम्नलिखित से उच्च अधिगम स्तर की ओर बढ़ता है।

ये चरण निम्नलिखित हैं :

- शब्दों की पहचान करना
- प्रतीकों के साथ अर्थ का साहचर्य
- शाब्दिक समझ
- व्याख्या
- समालोचनात्मक पठन
- सृजनात्मक पठन

आइए, इन छः चरणों को उपरोक्त वर्णित क्रम में समझने का प्रयास करते हैं।

i) ***शब्दों की पहचान :*** शब्दों की पहचान से हमारा तात्पर्य है विद्यार्थी का लिखित प्रतीकों को मौखिक या उप-मुखर रूप से एक वाचनीय शब्द में रूपांतरित करने की योग्यता है। शब्द की पहचान किए बिना कोई पठन नहीं हो सकता।

अधिकांश विद्यार्थी उच्च शिक्षा में आने तक शब्द-पहचान करने के कौशल से युक्त हो जाते हैं। उच्च शिक्षा स्तर पर भी उन्हें शब्द पहचान को सुगम बनाने के लिए आवश्यक सिद्धान्त और प्रक्रिया का सतत् अभ्यास और पुनर्विचार की

आवश्यकता है। किसी भी विषय में शब्द पहचान से सम्बन्धित समस्या उत्पन्न हो सकती है। प्रायः विज्ञान विषय में एक विद्यार्थी को कई नए शब्दों से सामना करना पड़ता है जिसके उच्चारण से वह अनभिज्ञ होता है। इन शब्दों की पहचान करना, पढ़ना, समझना तथा सीखना आवश्यक है।

ii) ***प्रतीकों के साथ अर्थ का साहचर्य :*** परिचित शब्द को विद्यार्थी शीघ्रता से उच्चारण कर सकता है। एक गणितीय या वैज्ञानिक प्रतीक प्रायः एक जटिल सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है जिसे समझना उतना ही कठिन हो सकता है जितना अमूर्त मौखिक प्रतीक। जब एक विद्यार्थी एक नए शब्द से परिचय प्राप्त करता है और सीखता है तो वह इसे विविध संदर्भों में इसकी पहचान करता है और इसलिए वह कहता है कि उसने एक नई अवधारणा सीख ली है। आइए, एक उदाहरण लेते हैं। एक शब्द जैसे 'सन्निकरण' का उपयोग गणित, अंग्रेजी तथा सामाजिक अध्ययन में किया जाता है – वस्तुतः एक विद्यार्थी इसका सामना लगभग सभी जगह करता है। इसी प्रकार, शब्द 'तार्किक', उदाहरण स्वरूप, का गणित में सामान्य उपयोग के अतिरिक्त इसका उपयोग विशिष्ट रूप से भी किया जाता है। ऐसे शब्द हैं जिनके अत्यधिक सामान्यीकृत तथा तकनीकी अर्थ होते हैं। ऐसे भी शब्द हैं जिनका केवल तकनीकी अर्थ होता है, वे प्रायः एक क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित होते हैं। निश्चित रूप से समय व्यतीत होने के साथ-साथ ऐसे शब्द भी सामान्यीकृत हो जाते हैं जैसे-जैसे इनका उपयोग विविध संदर्भों में अधिक से अधिक होता है। सभी प्रकार के शब्दों को सीखना है क्योंकि सटीक संवाद तभी स्थापित किया जा सकता है जब शिक्षक और विद्यार्थी प्रत्येक शब्द के पीछे अवधारणा की एक समान समझ रखेंगे।

iii) ***शाब्दिक समझ :*** इसमें उप-कौशलों का समावेश होता है – तथ्यों तथा केंद्रीय विचार के लिए अध्ययन सहायक तर्कों को नोट करना इत्यादि। विभिन्न प्रकार के विवरणों का व्यवस्थीकरण भिन्न-भिन्न प्रभाव उत्पन्न करता है, यद्यपि, वे आवश्यक रूप से समान हो सकते हैं। विद्यार्थियों को, इसलिए, व्यक्तिगत तथ्य की सटीक शाब्दिक समझ के लिए न केवल पढ़ना सीखना है बल्कि इन तथ्यों का अधिगम सामग्री के अन्य तथ्यों के साथ विशेष सम्बन्धों की समझ होना आवश्यक है।

iv) ***व्याख्या :*** व्याख्या विद्यार्थी को छपे हुए शब्दों और दृश्यों के परे ले जाता है तथा विद्यार्थी को अपने विचारों को सुव्यवस्थित करना होता है। इसमें विद्यार्थी को वर्तमान में जो कुछ पढ़ रहा है उसे उसके पूर्व अध्ययन और जीवन अनुभव से जोड़कर देखने की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप विद्यार्थी अनुमान और निष्कर्ष निकालने के योग्य हो जाता है। दूसरे शब्दों में, विद्यार्थी शब्द या दृश्य का निहित अर्थ समझ बनाने लगता है। यह पठन प्रक्रिया कठिनाई के विभिन्न स्तर के साथ सभी विषयक्षेत्र के लिए आवश्यक है।

v) ***समालोचनात्मक पठन :*** पठन क्रिया का मूल्यांकन पहलू, प्रायः समालोचनात्मक पठन कहा जाता है, विद्यार्थी को छपे हुए शब्द या दृश्य से हटकर एक अलग दिशा में जाने की आवश्यकता होती है। इस स्तर पर विद्यार्थी जो पढ़ चुका है उसके आधार पर निर्णय लेता है। उसकी व्यक्तिगत भावनाएँ और पूर्वाग्रह की बहुत छोटी भूमिका होती है क्योंकि वह राय से तथ्यों को अलग करता है तथा पठन सामग्री में प्रस्तुत तार्किकता के अर्थ का मूल्यांकन करता है। विद्यार्थी वास्तविक सामग्री की उपयोगिता, प्रासंगिकता और प्रमाणिकता पर विचार करता है।

vi) ***सृजनात्मक पठन :*** सृजनात्मक पठन शाब्दिक समझ, व्याख्या और समालोचनात्मक पठन स्तर के परे विभिन्न चिंतन कौशल का उपयोग करता है। अधिगम सामग्रियों में शिक्षक द्वारा प्रस्तुत हल, विचार की जगह विद्यार्थी नए या प्रभावी वैकल्पिक विचार, हल ढूँढ़ने का प्रयास करता है।

प्रत्येक पठन क्रिया न केवल अन्य पठन क्रिया को प्रभावी ढंग से प्रभावित करता है बल्कि अपठन क्रिया जिसे विद्यार्थी संपादित करेगा उसे भी प्रभावित करता है। सबसे सरल जिसमें विद्यार्थी को प्रत्यक्ष रूप से सृजनात्मक पठन से प्रभावित करता है वह कौशल के उपयोग में उसके द्वारा अर्जित आत्मविश्वास है। यह कौशल एक निश्चित स्तर पर, इतना स्वाभाविक बन जाता है कि वह एक स्वचालित उपागम का विकास कर लेता है। जब उसे सरसरी तौर पर पढ़ने की आवश्यकता होती है वह स्वाभाविक रूप से कर लेता है। जब उसे पूर्ण स्मरण करने के लिए पठन करने की आवश्यकता होती है तो वह कर लेता है। इस प्रकार वह पठन के माध्यम से अर्जित कौशल, अवधारणाओं, अभिरूचि को आत्मसात करना सीख जाता है। इस स्तर पर विद्यार्थी को यह अहसास होने लगता है कि किस प्रकार छपे पृष्ठ पर, एक मानचित्र या एक आलेख पर ध्यान देना है, इससे जो चाहता है उसे किस प्रकार प्राप्त करना है तथा इनसे कब बाहर निकलना है जब यह अहसास होने लगता है कि अधिक समय व्यतीत करना व्यर्थ है।

पठन क्रिया के विभिन्न स्तरों में समावेशित कौशलों को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

- पठन के लिए उद्देश्य तय करना, सामग्री का सर्वेक्षण करने की योग्यता तथा दी गई किसी सामग्री के पठन के लिए उपयुक्त तकनीक का निर्धारण करना।
- आलेखीय और चित्रांकित सामग्रियों को समावेशित करने की योग्यता।
- विविध अधिगम स्रोतों से सूचनाएँ ढूँढ़ना, समझना और उन्हें संग्रहित करने की योग्यता।

ख) पठन की SQ3R तकनीक

विभिन्न अधिगम सामग्रियों के लिए अलग-अलग उपागम की आवश्यकता, विद्यार्थी उनमें से क्या प्राप्त करने की अपेक्षा रखता है के ऊपर निर्भर करता है। यहाँ पर निहितार्थ है कि लिखित सामग्रियों से निपटने के लिए लचीली युक्ति होनी चाहिए। एक युक्ति जिसे व्यापक रूप से अपनाया गया है वह **SQ3R** तकनीक है। SQRRR या "SQ3R" एक पठन बोध विधि है इसे निम्नलिखित पाँच चरणों के आधार पर नाम दिया गया है:

- सर्वेक्षण
- प्रश्न
- पठन
- स्मरण
- समालोचना

इस विधि को सन् 1946 में फ्रांसिस पी रॉबिन्सन ने पुस्तक *इफैक्टिव स्टडी* में वर्णन किया है। उपर्युक्त लिखित प्रत्येक चरण की चर्चा हम दिए हुए क्रम में करेंगे:

i) **सर्वेक्षण :** यह एक लेख के शीर्षक पृष्ठ, प्रस्तावना, शीर्षक इत्यादि पर एक सरसरी निगाह डालने से सम्बन्धित है। एक लेख का सर्वेक्षण आपको मुख्य विचार के बारे में समझ बनाने में सहायता करता है। शीर्षक पृष्ठ पर एक निगाह डालने पर आपको निम्नलिखित बातों का ज्ञान हो सकता है:

- सामान्य विषय क्षेत्र;
- उपागम का स्तर;
- लेखक का नाम; और
- प्रकाशन की तिथि और स्थान।

एक अधिगम सामग्री का परिचय आपको और अधिक विवरण देगा। यह आपको यह निर्धारण करने में सहायता करता है कि इस पर ध्यान देना है या नहीं। पाठ की संरचना एक अन्य स्रोत है जिसकी अवहेलना प्राथमिक सर्वेक्षण के दौरान नहीं करनी चाहिए। संरचना का एक त्वरित सर्वेक्षण आपको बताता है कि शिक्षक किस शीर्षक पर चर्चा कर रहे हैं तथा शीर्षक को किस प्रकार व्यवस्थित किया गया है।

संरचना का सर्वेक्षण आपको तुरंत जानकारी देगा कि लेख में आपकी इच्छित विवरण है कि नहीं। यह सीधे ही सबसे प्रासंगिक अधिगम बिन्दु की ओर निर्दिष्ट करके आपके समय और प्रयास की बचत करने में सहायता करेगा।

ii) **प्रश्न** : अधिगम लेख का सर्वेक्षण आपके मस्तिष्क में कुछ प्रश्न उत्पन्न करेगा। उदाहरण के लिए शीर्षक पृष्ठ, प्रस्तावना और संरचना पर एक दृष्टि डालने के पश्चात आप अपने से प्रश्न पूछें :

- इस लेख पर किस हद तक मैं निर्भर रह सकता हूँ?
- क्या लेख इसके प्रस्तावना के अनुरूप मेरे लिए सहायक होगा?
- लेखक ने एक पूरी इकाई या पाठ में इस या उस शीर्षक पर ध्यान क्यों दिया??

ये सामान्य प्रश्न लेख को किस ढंग से परखना है के निर्धारण में आपकी सहायता करता है।

जब आप लेख को एक पूर्ण के रूप में सर्वेक्षण करने से हटकर एक विशिष्ट प्रकरण/शीर्षक की ओर बढ़ते हैं तब आपके प्रश्न और विशिष्ट बन जाएँगे। कभी-कभी लेखक स्वयं लेख की शुरुआत अथवा अंत में स्वयं प्रश्न प्रस्तुत करता है। चूँकि सामान्यतः प्रश्न अधिक सहायक होते हैं यदि इन्हें इकाई के प्रारंभ में दिया जाता है; यह बेहतर होगा यदि आप इकाई के प्रारंभ और अंत में दिए गए प्रश्नों पर ध्यान देंगे। हमें लेखक द्वारा प्रस्तुत प्रश्न की अवहेलना नहीं करनी चाहिए, जो प्रश्न प्रभावकारी पठन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सर्वेक्षण करने तथा प्रश्न पूछने के पश्चात् **SQ3R** तकनीक के तीसरे चरण अर्थात् "लेख के पठन" के लिए आप तैयार हैं।

iii) **पठन :** लिखित सामग्री के पठन हेतु एक समालोचनात्मक मस्तिष्क की आवश्यकता होती है। जब हम एक लेख पढ़ते हैं हम अपना मस्तिष्क का, हमारे संपूर्ण समालोचनात्मक कौशल के साथ, उपयोग करते हैं। जब तक हम सक्रिय रूप से निर्मित किए गए प्रश्नों को नहीं पढ़ते हैं तब तक संतोषजनक रूप से हम उत्तर नहीं दे सकते हैं। दो महत्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं:

- इस स्तर पर नोट बनाने की सलाह नहीं दी जाती है। हम लेखक के विचारों/शब्दों को नोट करने को प्रवृत्त हो सकते हैं न कि अपने स्वयं के विचार को। यह अधिगम और समझ के विकास में सहायता नहीं करता है।
- यह वह स्तर भी नहीं जहाँ हम वाक्यांश या शब्दों को चिन्हित करें। द्वितीय पठन क्रिया में हमें अहसास हो कि चिन्हित शब्द/वाक्यांश हमारे उद्देश्य के लिए अधिक महत्वपूर्ण नहीं हैं।

इन दो बिन्दुओं को ध्यान में रख कर हमें प्रथम पठन क्रिया में केवल लेख के मुख्य विचार और अन्य विवरण पर ध्यान देना चाहिए।

iv) **स्मरण** : एक लेख का पठन अधिगम का अंतिम चरण नहीं है। यह वास्तव में अधिगम प्रक्रिया का प्रथम चरण है। पढ़े हुए को सुदृढ़ बनाने के लिए हमें स्मरण करने की आवश्यकता है। आपने जो पढ़ा है उसे पुनःस्मरण करने का प्रयास आपके अधिगम को कम से कम तीन तरीकों से बेहतर बनाने में सहायता करेगा। यह तीन तरीके हैं – ध्यान केन्द्रित करने में सहायक, गलत व्याख्या को सुधारने का अवसर, तथा समालोचनात्मक पठन का विकास।

v) **समीक्षा** : समीक्षा करने का उद्देश्य है हमारी स्मरण शक्ति की वैधता की जाँच करना है। समीक्षा करने का सबसे अच्छा तरीका है त्वरित रूप से अन्य चार चरणों – सर्वेक्षण, प्रश्न, पठन और स्मरण – दोहराना या पुनरावृत करना।

पठन के **SQ3R** तकनीक की चर्चा करने के पश्चात् हम यह कह सकते हैं कि यदि हम इस तकनीक को अपनाते हैं तो हमें **SQ3R** तकनीक को जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है उसके तार्किक क्रम का अनुसरण करना चाहिए कि नहीं। यद्यपि **SQ3R** तकनीक की चरण एक तार्किक व स्वाभाविक क्रम में होते हैं। उनके मध्य पुनरावृत्ति और अध्यारोपण हो सकता है। उदाहरण के लिए, यद्यपि सर्वेक्षण या पठन पर बल दिया जाता है हम अभी भी प्रश्न पूछने की अवस्था में अपने आपको पाते हैं या हम स्मरण या पुनः समीक्षा के लिए तृतीय चरण (अर्थात् पठन) में व्यवधान चाहते हैं या सर्वेक्षण की पुनरावृत्ति के उद्देश्य से। तथापि **SQ3R** तकनीक को इसी क्रम में अपनाने में कोई हानि नहीं है।

SQ3R तकनीक केवल छपे हुए सामग्री तक ही सीमित नहीं है। इस स्तर पर उपयुक्त सुधार करके हम इस तकनीक का उपयोग इलैक्ट्रानिक मीडिया में भी कर सकते हैं। स्तर जिसे हम परिवर्तित कर सकते हैं वह तृतीय अर्थात् पठन है। इसे हम श्रवण या दृश्य में परिवर्तित कर सकते हैं तथा इसका निर्धारण इस तथ्य के आधार पर होगा कि हम श्रवण या वीडियो कार्यक्रम में संलग्न हैं। मुद्रित मीडिया के सम्बन्ध में हमने जो चर्चा की उसका उपयोग इलैक्ट्रानिक मीडिया में भी किया जा सकता है।

9.4.3 लेखन कौशल

एक स्व-निर्देशित विद्यार्थी अपना अधिकांश समय पाठ्यक्रम सामग्री के पठन/पाठन में, एक श्रव्य कार्यक्रम को सुनने में, एक वीडियो कार्यक्रम को देखने में, या पाठ्यक्रम सामग्री पर आधारित सत्रीय कार्य का उत्तर लिखने में व्यतीत करते हैं। इस प्रकार, लेखन कौशल उसके लिए अत्यंत आवश्यक है। यहाँ पर हम जो कुछ हमने पढ़ा है उस पर नोट/टिप्पणी लिखने, संक्षिप्तीकरण करने तथा रूपरेखा बनाने के कुछ तकनीक पर हम चर्चा करेंगे।

नोट बनाना/लिखना : नोट बनाने से हमें मुख्यतः दो तरीकों से सहायता मिलती हैः

- जब हम सीख रहे होते हैं तो यह हमें सक्रिय बनाता है (और इस प्रकार हमारे ध्यान में वृद्धि करता है)।
- यह हमने जो पढ़ा है उसका रिकार्ड रखने में सहायता करता है (मीडिया के निरपेक्ष में)।

  यदि हमने जो कुछ पढ़ा, सुना या देखा उस पर पकड़ बनाना चाहते हैं तो यह सदैव सहायक होगा कि हम बजाय अस्पष्ट स्मृति पर निर्भर रहने के कुछ शब्द कागज पर लिखें। स्मृति समय के साथ बह जाता है जब तक कि हम इससे सम्बन्धित कुछ शब्द नोट न कर लें। आप अपना लिखित रिकार्ड को एक स्थायी अनुस्मारक के रूप में रख सकते हैं।

नोट संरक्षण : नोट संरक्षण के कई तरीके हो सकते हैं। आदर्श रूप से हम अपने नोट को एक क्रम में रखते हैं ताकि दिए गए एक शीर्षक पर लिखित सभी नोट को एक जगह रख सकें – चाहे उसे हम मुद्रित लेख के पठन से, व्याख्यान सुनकर या वीडियो कार्यक्रम देखकर एकत्रित करें। ऐसी स्थिति में बाईडिंग नोट हमें अधिक लाभ नहीं पहुँचा सकते क्योंकि हम हमारे नोट को उसी क्रम में रखने के लिए बाध्य होंगे जिस क्रम में हमने उन्हें लिखा है। जबकि एक पत्र बाईन्डर में हम अपने कागज पत्रक को पुनः व्यवस्थित कर सकते हैं, हटा सकते हैं, पुनः लिख सकते हैं या नई सामग्री जोड़ सकते हैं।

नोट बनाने में आपको ध्यान रखना होगा कि आप केवल अत्यंत आवश्यक को ही लिखें। आपको छोटे लेख के पुलिन्दा बनाने से बचना चाहिए। नोट कार्ड्स में नोट बनाने में आप निम्नलिखित को ध्यान में रख सकते हैंः

- यदि आप लेखक के शब्दों को हूबहू उल्लेखित करते हैं आप सुनिश्चित करें कि वे उद्धरण चिन्ह के भीतर रहे।
- आपने जो कुछ पढ़ा या सुना उसका संक्षिप्तीकरण करने का प्रयास करें परंतु ध्यान रहे कि आप वास्तविक तथ्य का उल्लेख कर रहे हैं न कि अपनी राय दे रहें हैं।
- यदि आप अपना या किसी अन्य की राय दे रहे हैं तो सुनिश्चित करें कि आप इसे कार्ड्स में रिकार्ड करें ताकि आप राय और तथ्यों के मध्य स्पष्ट अंतर कर सकें।
- सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित मुद्दों पर नोट बनाने से बचना चाहिए।
- एक सूचना पर दो बार नोट नहीं बनाना चाहिए।

अब हम नोट बनाने के तरीकों के बारे में चर्चा करेंगे। मुख्यतः दो तरीकों से नोट तैयार किया जा सकता हैः

- सारांशीकरण
- रूपरेखा

आइए, इसके बारे में और अधिक जानने का प्रयास करते हैं।

सारांशीकरण : सारांश लेख का वास्तविक संक्षिप्तीकरण रूप है। एक अच्छा सारांश संक्षिप्त तथा केवल आवश्यक सूचनाओं को समावेशित करने वाला होना चाहिए। अनुच्छेद के मुख्य बिन्दु या एक लेख के मुख्य विचार तथा महत्वपूर्ण तथ्यों को उसी क्रम में लिखना आवश्यक नहीं है जिस क्रम से पाठ्यांश में लिखा हुआ है (क्रम को अनुसरण तभी करें जब सारांश में यह आवश्यक हो)। सारांश में केवल वहीं सूचनाएँ सम्मिलित करें जो इकाई में उल्लेखित हों न कि अपना विचार या आप जो कुछ विचार कर रहे हैं उन्हें सम्मिलित करें।

रूपरेखा : सामान्यतः हम आवश्यक बिन्दुओं को एक आरेख के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसे रूपरेखा कहा जाता है। जहाँ संभव हो वहाँ पर सारांश लिखने के बजाय जो हमने पढ़ा है या सुना है उसकी रूपरेखा बनाएँ। रूपरेखा में हम सूक्ष्म विवरण भी सम्मिलित कर सकते हैं जो सारांश में संभव नहीं है। यहाँ पर आप जो पढ़ते, सुनते या देखते हैं उसके लिए रूपरेखा तैयार करने के कुछ दिशा निर्देश निम्नलिखित हैं :

- लिखित शीर्षक से आप अपनी रूपरेखा हेतु ढाँचा प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक शीर्षक को एक अर्थपूर्ण वाक्य में विस्तारित करें जिसमें भाग या उपभाग (जिससे यह सम्बन्धित है) के मुख्य विचार का समावेश हो।

- यदि शीर्षक सीमित है तो आपको शीर्षक, वाक्य या भाग के प्रत्येक अनुच्छेद पर ध्यान देने की आवश्यकता है। शायद इसमें मुख्य विचार का समावेश हो जिसकी आपको नोट रखने की आवश्यकता हो तथा तर्क के विकास में यह सहायक हो। यदि आप महत्वपूर्ण विवरण सम्मिलित करना चाहते हैं आप उन्हें कोष्टक में प्रस्तुत कर सकते हैं।

- एक बार जब आप मुख्य विचार की पहचान कर लेते हैं तो आप उन्हें हाशिये पर उनके प्रसंगानुसार महत्व के अनुरूप लिख सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप मुख्य मद को मार्जिन पर द्वितीय क्रम के मद को आधा इंच नीचे, तथा तृतीय क्रम के मद को पुनः आधा इंच नीचे रखें जैसा कि नीचे दर्शाया गया है।

मुख्य मद

द्वितीय क्रम मद

तृतीय क्रम मद

.....

आपको अधिक या कम जगह छोड़कर नहीं लिखना चाहिए। यदि कम जगह छोड़ा तो सम्बन्ध स्पष्ट नहीं होगा और आपके पास नोट लिखने के लिए अधिक स्थान उपलब्ध नहीं होगा।

इसका आशय यह नहीं है कि रूपरेखा केवल "पंक्ति से हटकर नया अनुच्छेद आरंभ कर" के द्वारा तैयार किया जाना चाहिए। एक दिए हुए शीर्षक की रूपरेखा हेतु आप अक्षर, संख्या, बुलेट आदि का इस्तेमाल कर सकते हैं। सामान्यतः निम्नलिखित नियमों का पालन रूपरेखा के लिए किया जाता है:

- रोमन संख्या (I, II, आदि) मुख्य शीर्षक के लिए, रोमन संख्या के पश्चात् एक बिन्दु लगाया जाता है।
- वर्णमाला के बड़े अक्षर (A, B, आदि) उप-शीर्षक के लिए प्रत्येक बड़े अक्षर के बाद एक बिन्दु लगाकर।
- सामान्य अरबिक संख्यांक (1, 2, आदि) उप-शीर्षक के अंतर्गत विवरण के लिए तथा छोटे अक्षर कम महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए, प्रत्येक अक्षर और संख्यांक के पश्चात् बिन्दु लगाकर।
- रोमन संख्याएँ, बड़े अक्षर, सामान्य संख्याएँ, तथा छोटे अक्षर सीधी ऊर्ध्वाधर रेखा में।
- प्रत्येक शीर्षक का प्रारंभ एक बड़े अक्षर से होता है, चाहे वह एक मुख्य शीर्षक, एक उप-शीर्षक या एक विवरण हो।

- शीर्षक प्रायः वाक्यांश कभी-कभी वाक्य होते हैं। इन्हें मिश्रित न करें।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) दूरस्थ शिक्षा में स्व–अधिगम के लिए महत्वपूर्ण आवश्यक कौशल क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 स्व-निर्देशित अधिगम सहायता : संप्रेषण प्रौद्योगिकी की भूमिका

संपूर्ण विश्व में संप्रेषण प्रौद्योगिकी एक मुख्य और शक्तिशाली भूमिका व्यक्तियों के अधिगम में निभा रहा है। संप्रेषण प्रौद्योगिकी संपूर्ण स्व-अधिगम के दौरान स्व-विकास के अवसर उपलब्ध कराती है तथा समाज के एक सुशिक्षित व्यक्ति बनने हेतु उन्हें सशक्त बनाती है। प्रौद्योगिकी जो औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा के रूप में विकसित हुआ था वह जीवन पर्यन्त शिक्षा के लिए शैक्षणिक साधन बन गया। प्रौद्योगिकी का उपयोग सूचना और क्रियाकलापों दोनों के प्रबंधन के लिए किया जा सकता है।

संप्रेषण प्रौद्योगिकी अधिगम का एक महत्वपूर्ण साधन है तथा यह ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति उपलब्ध कराता है तथा बढ़ावा देता है। प्रौद्योगिकी शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने की भूमिका से हटकर एक व्यक्तिवादी तरीके से विविध स्रोतों के माध्यम से ज्ञान अर्जन के सहजकर्त्ता के रूप में परिवर्तित होगा। प्रौद्योगिकी यदि उचित रूप से डिजाइन, कार्यान्वित और निरीक्षण किया जाता है तो इससे स्व-अधिगम की गुणवत्ता और मात्रा दोनों के संदर्भ में उत्पादकता में वृद्धि कर सकता है।

स्व-निर्देशित अधिगम के लिए एक महत्वपूर्ण पहल अधिगम समूह की स्थापना करना है जो विद्यार्थी को एक समान अध्ययन पाठ्यक्रम में संलग्न समूह के साझा अनुभव से लाभान्वित होने के लिए अनुमति देता है। यह विकासशील राष्ट्रों के लिए महत्वपूर्ण बन गया है जहाँ सभी विद्यार्थियों के पास घर में आधुनिक संप्रेषण प्रौद्योगिकियों का अभाव है। अधिगम समूह (प्रौद्योगिकी सहायता पहुँचाने के अतिरिक्त) के सदस्य आपस में अपने अनुभव व विचार और दृष्टिकोण का साझा और अवलोकन करने का अवसर उपलब्ध कराता है। समूह चर्चा तथा महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए सहायता स्रोत उपलब्ध कराएगा तथा विश्वस्त होते हैं कि वे सफलतापूर्वक पाठ्यक्रम पूरा कर लेंगे। वास्तव में, अधिगम समूह यह अहसास दिलाने में अपना योगदान दे सकता है कि यही एक वास्तविक कक्षा है।

संप्रेषण प्रौद्योगिकी वृहत अंतःक्रिया, त्वरित और मंदित अंतःक्रिया के लिए क्षमता उपलब्ध कराता है। विभिन्न प्रौद्योगिकियों से लाभ प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी में इच्छाशक्ति होनी चाहिए (अधिगम के लिए मानसिक और मनोवैज्ञानिक तैयारी) तथा उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रभावी अंतःक्रिया के उपयोग के लिए कौशल होना चाहिए। उन्हें अपने आपको विविध

संज्ञानात्मक कार्यों में संलग्न जैसे सुनना, देखना, पढ़ना, बोलना या इनके संयोजन से, होना चाहिए। विद्यार्थी का उन कार्यों में अर्थपूर्ण ढंग से भागीदारी उनको उनके अधिगम में सजग और सक्रिय बनाए रखेगा।

हम इस पाठ्यक्रम के खंड 2 की इकाई 6 में विभिन्न प्रौद्योगिकियों की शक्ति और सीमाओं के बारे में चर्चा कर चुके हैं। यहाँ पर हमारा उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा में व्यक्तिगत प्रौद्योगिकी की भूमिका के बारे में चर्चा करना नहीं है। कुछ प्रौद्योगिकियाँ अन्य के मुकाबले अधिक स्वायत्तता प्रदान करती हैं। परंतु हम दूरस्थ शिक्षा में कम्प्यूटर को एक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी मानने के लिए तत्पर रहते हैं। कम्प्यूटर स्रोत, सहयोगात्मक अधिगम और व्यक्तिगत उपलब्धियों का एक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य कर सकता है। यह संप्रेषण का एक तरीका उपलब्ध कराता है जो स्वतंत्र रूप से अधिगम की संभावना में वृद्धि करता है।

कम्प्यूटर अपने साथ स्व-अधिगम के लिए बहुत ही रोचक संभावनाए लाया है। कम्प्यूटर का एक उपयोग है इंटरनेट तक पहुँच जो एक व्यक्तिगत उपयोगकर्त्ता तक पहुँचने का एक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी आविष्कार है। जो उन्हें स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए अत्यधिक क्षमता प्रदान करता है। और इसे यह कम कीमत पर करता है। यह विद्यार्थी को वैश्विक स्तर का इलैक्ट्रॉनिक संप्रेषण के लिए रास्ता खोलता है। एक कम्प्यूटर को टेलीफोन लाइन, एक मॉडम के साथ जोड़ करके एक विद्यार्थी दूसरे कम्प्यूटर नेटवर्क तथा इंटरनेट से जुड़ सकता है। कम्प्यूटर के नेटवर्क माध्यम से शिक्षा उपलब्ध कराने का अर्थ है प्रत्येक विद्यार्थी को उसके आवश्यकतानुरूप शिक्षा के अवसर प्रदान करना।

दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थीगण को अर्थपूर्ण ढंग से संप्रेषण प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने हेतु तथा प्रौद्योगिकी आधारित अधिगम स्रोत के लिए उन्हें प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। उन्हें स्व-अधिगम पुस्तिका उपलब्ध कराया जा सकता है जिसमें चरणबद्ध तरीके से, संप्रेषण प्रौद्योगिकी आधारित घटक के उपयोग के लिए अनुदेश होता है। यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि किस प्रकार ज्ञानार्जन, कौशल और अभिवृत्ति अर्जन के लिए तकनीक का प्रभावकारी ढंग से उपयोग किया जाता है। अधिगम में उपयुक्त प्रौद्योगिकी का उपयोग विद्यार्थी की अधिगम प्रक्रिया में स्वयं को संलग्न रखने के तरीके में आवश्यक परिवर्तन की आवश्यकता है।

9.6 सारांश

इस इकाई में हमने दूरस्थ विद्यार्थी की विशेषताओं जैसे आयु, जेन्डर, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति, भौगोलिक स्थिति, भाषाई कौशल, शैक्षणिक परंपरा तथा विकलांगता का विश्लेषण किया है जिसका दूरस्थ अधिगम के लिए निहित अर्थ है। दूरस्थ विद्यार्थियों की सामान्य समस्याओं में अलग पढ़ना, प्रेरणा का अभाव, निम्न अधिगम कौशल, पढ़ाई तथा अन्य जिम्मेदारियों के मध्य सामंजस्य बैठाना और अन्य प्रतिबद्धताओं, निम्न स्थरीय पाठ्यक्रम स्वरूप अपर्याप्त संस्थागत समर्थन आदि सम्मिलित है।

हमने स्व-निर्देशित/स्व-अधिगम की अवधारणा पर भी चर्चा की। यह स्वतंत्र रूप से सूचना पर ध्यान देना, सूचना प्राप्त करना तथा समझ बनाने से सम्बन्धित है। स्व-अधिगम विद्यार्थी द्वारा स्वयं निर्देशित और प्रबंध किया जाता है। हमने स्व-अधिगम के विभिन्न चरणों और विशेषताओं के बारे में चर्चा की। हमने अधिगम को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों जैसे प्रेरणा, अधिगम सामग्री, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, परिवेशीय कारकों, तथा अधिगम सहायक पर ध्यान केन्द्रित किया। जिस संस्थागत व्यवस्था के बारे में हमने चर्चा की वह विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करने, नामांकन पूर्व परामर्श, प्रभावी प्रक्रिया और परिचालन तथा व्यवस्थान्वयक

सहायता से सम्बन्धित है जो समय पर सामग्री भेजने से, सत्रीय कार्यों का संचालन, अनुशिक्षण और परामर्शदाता सत्र का आयोजन करना सम्मिलित है तथा शैक्षणिक कार्यक्रम के कार्यान्वयनीकरण, विकास, शैक्षणिक सिद्धान्त का अभ्यास आवश्यक है।

इसके अतिरिक्त, हमने स्व-अधिगम के आवश्यक कौशल – पठन कौशल, अध्ययन कौशल तथा लेखन कौशल से भी सामंजस्य स्थापित किया। अंतिम भाग में हमने स्व-अधिगम में संप्रेषण प्रौद्योगिकी की भूमिका के बारे में चर्चा की तथा तर्क दिया कि वर्तमान में तथा उभरती संप्रेषण प्रौद्योगिकी ने सामान्य रूप से दूरस्थ शिक्षा, तथा विशेष रूप से स्व-अधिगम के प्रभावीकरण में योगदान दिया है। वर्तमान समय में कम्प्यूटर तथा इंटरनेट ने स्व-अधिगम के हित में वृहत स्तर पर महत्वपूर्ण नवीन प्रौद्योगिकी के रूप में कार्य कर रहा है तथा भविष्य में भी जारी रहेगा।

9.7 "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर

1) एक नियम के रूप में, किसी संस्था या देश की दूरस्थ शिक्षा एक समरूप समुदाय की तरह नहीं होती है। वे आयु, जेन्डर, आर्थिक और सामाजिक स्थिति व भौगोलिक वितरण, अधिगम तरीका, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, आदि से भिन्न होते हैं।

   भारत में दूरस्थ विद्यार्थी की अन्य विशेषताएँ भी हैं। जाति और वर्ग विभाजन, सदियों पुरानी गरीबी, निरक्षरता, पूर्वाग्रह, सांस्कृतिक भिन्नता, शहरी-ग्रामीण विभाजन तथा मान्यताएँ विद्यार्थियों के मध्य और भी अंतर करता है।

   भाषाई मुद्दा, विशेष रूप से अनुदेशन के माध्यम के रूप में अंग्रेजी का उपयोग, शिक्षण अधिगम के प्रति विद्यार्थी का मनोदृष्टि पर शैक्षणिक परंपरा की छाप, तथा विभिन्न प्रकार की अक्षमता ने भारत में दूरस्थ विद्यार्थियों की बनावट को वृहत रूप से प्रभावित किया है।

2) हमारे विचार से भारत जैसे विकासशील देश में दूरस्थ विद्यार्थियों के अध्ययन को निम्नलिखित समस्याएँ गंभीर रूप से बाधित और कुव्यवस्थित कर सकती हैं:

   i) समय पर अधिगम सामग्री प्राप्त न होना (इससे विद्यार्थी हतोत्साहित होंगे तथा उनके सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने के कार्यक्रम में व्यवधान उत्पन्न होगा)।

   ii) निम्न स्तरीय अधिगम सामग्री (अनुपयुक्त डिजाइन, विषयवस्तु की चयन में गलती, या गलत स्तर पर चयन का प्रयास प्रारंभिक अवस्था में ही ड्राप आउट का कारण हो सकता है)।

   iii) सत्रीय कार्य तथा अन्य रचनात्मक और सतत् मूल्यांकन के बारे में सतही उपागम, विद्यार्थी को दिशाहीन कर सकता है)।

   iv) विद्यार्थियों के प्रश्नों का उत्तर न मिलना या गलत उत्तर मिलना।

   v) उच्च स्तरीय शैक्षणिक क्रियाकलापों का अभाव जो पाठ्यक्रम को स्तरहीन बनाता है तथा अन्ततः पाठ्यक्रम बाधित हो जाता है तथा नामांकन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।

3) दूरस्थ शिक्षा में स्व-निर्देशित अधिगम निम्नलिखित विशेषताओं के लिए होता है:

   i) विद्यार्थी-केन्द्रित अधिगम उपागम;

   ii) विद्यार्थी की स्वयं के अधिगम के प्रति जिम्मेदारी;

iii) व्यक्तिगत जरूरतों, रूचियों और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षा का लचीला प्रावधान;

iv) विशेष रूप से डिजाइन व तैयार की गई अधिगम सामग्री।

4) स्व-निर्देशित अधिगम का विशेषतापूर्ण चरण शैली में – निर्भरता इच्छुक, संलग्न और स्व-निर्देशित का समावेश है।

5) दूरस्थ शिक्षा में स्व-अधिगम को बढ़ावा देने में योगदान देने वाले कारक हैं :

i) वयस्क विद्यार्थी का अन्तर्निहित अभिप्रेरणा;

ii) प्रभावी स्व-अनुदेशनात्मक (अधिगम) सामग्री;

iii) विद्यार्थी की शैक्षणिक पृष्ठभूमि;

iv) अधिगम की स्वायत्तता; और

v) विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अधिगम सहायता।

6) दूरस्थ शिक्षा में स्व-अधिगम के लिए आवश्यक तीन महत्वपूर्ण कौशल हैं : अध्ययन कौशल, पठन कौशल और लेखन कौशल। यदि अनुदेशन का अधिकांश माध्यम श्रव्य दृश्य कैसेट, रेडियो प्रसारण तथा टेलीविजन माध्यम हैं या यदि श्रव्य दृश्य कैसेट, रेडियो प्रसारण तथा टेलीविजन प्रसारण मुद्रित माध्यम की सहायता करता है तो पठन, श्रवण और दृश्य कौशल भी स्व-अधिगम के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है।

9.8 संदर्भ ग्रंथ

Baath, J. A. (1979). *Correspondence Education in the Light of a Number of Contemporary Teaching Models*. Malmo: Liber Hermods.

Barrett, T. C. (1972). *Taxonomy of Reading Comprehension. Reading 360 Monograph*. Lexington, MA: Ginn & Co.

The Commonwealth of Learning. (1997). *Training Toolkit: Use and Integration of Media in Distance Education*. Vancouver, Canada.

Dart, B. (1997). "Adult Learner' Metacognitive Behaviour in Higher Education", in Peter Sutherland (ed.), *Adult Learning: A Leader*. London Kagan Page.

Gerald Grow: The SSDL model. (at: http://www.longleaf.net/ggrow).

Gibbs, G., Morgan, A. R., & Taylor, E. (1982). "Why students don't learn" reprinted in Jenkins, J. & Koul, B. N. (eds). (1991). *Distance Education: A Review*. Cambridge: International Extension College.

Grasha, A. (1996). *Teaching with Style: A practical guide to enhancing learning by understanding teaching & learning styles*. Pittsburgh: Alliance Publishers.

Griggs, S. A. (1991). *Counseling Gifted Children with Different Learning-Style Preferences. In Counseling Gifted and Talented Children: A Guide for Teachers, Counselors and Parents*. R. M. Milgram. Norwood, New Jersey: Ablex Publishing Corporation.

Grow, Gerald O. (1991/1996). 'Teaching Learners to be Self-Directed." Adult Education Quarterly, 41(3), 125-149. Expanded version available online at: http://www.longleaf.net/ggrow.

http://www.longleaf.net/ggrow/SSDL/Disc.html#DefinitionDiscussion, cited in Grow, 1991 at www.essentialgptrainingbook.com/resources/.../Grow%20-%20SSDL%20model.doc — Retrieved on 05-01-2017.

http://www.longleaf.net/ggrow/SSDL/Disc.html#DefinitionDiscussion — Retrieved on 05-01-2017.

IGNOU. (1994). ES-313: Student Support Services. Post-Graduate Diploma in Distance Education, STRIDE, New Delhi.

Jarvis, P., Holford, J., and Griffin, C. (Eds.) (1998). The Theory and Practice of Learning. London: Kogan Page.

Kit Logan and Pete Thomas (http://www.ppig.org/papers/14th-logan.pdf — Retrieved on 03-01-2017).

Knowles, M. (1975). *Self-directed learning: A guide for learners and teachers.* New York: Cambridge Books.

Knowles, M. (1984). *Andragogy in Action*. San Francisco: Jossey-Bass.

Peters, Otto. (1998). "The Asian Learner". A Working Paper. 12th Annual Conference of the Asian Association of Open Universities held at the Open University of Hong Kong, November 4-6, 1998.

Roberts, D. (1984). "Ways and means of reducing early student drop-out rates", *Distance Education*, Vol.5, No.1, 1984.

Robinson, Francis Pleasant. (1978). Effective Study (6th ed.). New York: Harper & Row.

Seaton, W. J. (1993). "Computer-mediated communication and student's self-directed learning". *Open Learning*, 8(2), 49-54.

Sewart, D. (1978). *Continuity of concern for students in a system of learning at a distance.* ZIFF, Hagen: FernUniversität.

www.essentialgptrainingbook.com/resources/.../Grow%20-%20SSDL%20model.doc — Retrieved on 05-01-2017.

Suggested Readings

Gagné, R. M. (1988). *Principles of Instructional Design*. New York: Holt, Rinehart and Winston.

Hershey, P., Blanchard, K. H. (1969). "Life cycles theory of leadership". *Training and Development Journal*, Vol.23, No.5, pp.26-34.

Pratt, D. D. (1988). "Andragogy as a relational construct". *Adult Education Quarterly*, 38(3), 160-181.

9.9 इकाई अंत अभ्यास

यहाँ दिए गए प्रश्नों के उत्तर आप अपनी इच्छानुसार संक्षिप्त टिप्पणी अथवा विस्तृत रूप में लिख सकते हैं। इस प्रकार की टिप्पणियाँ अथवा उत्तर परीक्षा हेतु तैयारी के समय आपकी सहायता कर सकते हैं।

इकाई अन्त्य प्रश्न

1) दूरस्थ विद्यार्थियों की विशेषताएँ, समस्याएँ और अपेक्षाएँ क्या हैं? (1,000 शब्दों में)।

2) स्व-निर्देशित अधिगम की अवधारणा और स्तरों की व्याख्या कीजिए। आप इसे कैसे प्रोत्साहित करते हैं? (1,000 शब्दों में)।

3) स्व-निर्देशित अधिगम के लाभ और हानियाँ क्या हैं? (500 शब्दों में)।

4) स्व-निर्देशित अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

5) स्व-निर्देशित अधिगम हेतु आवश्यक कौशलों की चर्चा कीजिए। (1,000 शब्दों में)।

6) संप्रेषण प्रौद्योगिकी स्व-निर्देशित अधिगम की सहायता किस प्रकार करती है? व्याख्या कीजिए। (500 शब्दों में)।

समालोचनात्मक चिन्तन हेतु प्रश्न

1) तथाकथित रूप से स्व-अनुदेशनात्मक सामग्री जो आपने सभी पाठ्य द्वारा दूरस्थ शिक्षार्थियों को निर्देशित करती है, में शिक्षक निहित होता है, स्व-निर्देशित अधिगम की अवधारणा को स्वीकार करना कठिन है। इस कथन पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी दीजिए।

क्रियाकलाप

इग्नू के बी.एड. कार्यक्रम करने के दौरान आपके द्वारा सामना किए गए कम-से-कम तीन प्रमुख समस्याओं का प्रत्यास्मरण कीजिए तथा लिखिए कि आपके अभ्यास द्वारा उनको किस प्रकार समाधान किया गया?

.....

.....

.....

.....

.....

.....